राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

क्रांति समय

कार्यालय ऑफिस

क्रांति समय दैनिक समाचार में
प्रेसनोट, नोटिस, वेपार संबंधित संपर्क करें
पता:- एस.टी.पी.आई-सुरत-395023
संपर्क नं.-7490923915
ईमेल:-info.krantisamay@gmail.com

सुरत गुजरात से प्रकाशित, मुंबई, उत्तरप्रदेश, बिहार, राजस्थान, मध्यप्रदेश, उत्तरांचल, उत्तराखंड, दिल्ली, हरियाणा में प्रकाशित

सुरत-गुजरात, संस्करण शनिवार 21 मार्च 2026 वर्ष-9,अंक-55 पृष्ठ-08 मूल्य-01 रूपये

Website : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

रैली रूट

START

अशोका ईन्टर नेशनल स्कुल द्वारकेश विहार कौशल पार्क तलंगपोर रोड से साई भुपत जलाराम → निलकंठ सोसायटी → काली माता मंदिर → पालीगाम → डायमंड गेट → ओवर ब्रीज के निचे से → रामदेव मेडिकल → खोडियार माता मन्दिर → जगन्नाथ मन्दिर → सुभाषचौक → कनकपुर से सचिन चार रस्ता → मुल्ला डाईंग → उन पाटिया → भेस्तान चार रस्ता → प्रियंका टाऊनशीप मलबेरी सर्कल → बड़ौदगाम अम्बेडकर चौक → तिरुपति सर्कल → मिलन पोईन्ट बमरोली → तेरेनाम रोड सम्राट कोरपोरेशन मे विलय

नोट - कार्यक्रम में आप सभी समय से सपरिवार जरुर आए और अपने सगे संबंधियों मित्रों को भी आमंत्रित करे धन्यवाद।

सिंगर

लोकगायक - धनंजय कुशवाहाजी (बिहार), प्रदीप मौर्यजी (अमेठी), मुकेश मौर्यजी (सूरत)

रैली रुट

START

सम्राट कोर्पोरेशन, सुखिनगर से → तेरे नाम तीन रस्ता → श्याम मंदिर अलथान ↩ डी-मार्ट → कैलाश चोकड़ी → पुलिस कालोनी → पियुष पोईन्ट → हरिनगर मौर्या मार्बल → मढी खमणी → उधना स्टेशन → नीलगिरी सर्कल गोड़ादरा चार रस्ता → साई पोईंट → नवागाम डिंडोली (मौर्य मानव सेवा चेरीटेबल ट्रस्ट) शिवहीरा नगर (गरनाला ब्रिज) → उधना तीन रास्ता → दक्षेश्वर BRTS लक्ष्मी नारायण ईन्डस्ट्रीयल, लीयो कलासीस के सामने, (लक्ष्मीनारायण मंदिर के पास BRC उधना) → (END - समापन...)

पुष्पवर्षा एवं जलपान पॉईंट

1. मौर्या बाटीचोखा (तेरेनाम चोकडी) 2. निलेश कटलरी (दत्तकुटीर, विजयानगर) 3. मौर्या मार्बल (हरिनगर) 4. अम्बिका हार्डवेयर (गोडादरा)

पारिवारिक स्नेह मिलन समारोह, संगीत, सभा एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम

नोट : रैली समापन के बाद सभी लोगों को परिवार सहित भोजन करके ही जाना है।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

सृष्टि संतुलन के लिये वनों की पुकार सुननी होगी

अंतर्राष्ट्रीय वन दिवस,

ललित गर्ग

वर्तमान समय में पर्यावरणीय असंतुलन अपने चरम पर है। जलवायु परिवर्तन के कारण तापमान में वृद्धि, अनियमित वर्षा, सूखा, बाढ़ और प्राकृतिक आपदाओं की बढ़ती आवृत्ति ने मानव जीवन को संकटग्रस्त कर दिया है। इन परिस्थितियों में वन एक ऐसे प्राकृतिक तंत्र के रूप में सामने आते हैं, जो पृथ्वी के संतुलन को बनाए रखने में केंद्रीय भूमिका निभाते हैं।

21 मार्च को प्रतिवर्ष मनाया जाने वाला अंतर्राष्ट्रीय वन दिवस केवल एक प्रतीकात्मक उत्सव नहीं, बल्कि मानव सभ्यता के सामने खड़ी एक गंभीर चुनौती की ओर संकेत करने वाला अवसर है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा वर्ष 2012 में इस दिवस की घोषणा इस उद्देश्य से की गई थी कि विश्व समुदाय वनों के महत्व को समझे, उनके संरक्षण के लिए संगठित प्रयास करे और प्रकृति के साथ संतुलित सह-अस्तित्व की दिशा में आगे बढ़े। आज जब पृथ्वी अभूतपूर्व पर्यावरणीय संकटों से जूझ रही है, तब इस दिवस की प्रासंगिकता और भी बढ़ जाती है। वर्ष 2026 की थीम 'वन और भोजन' यह स्पष्ट करती है कि वन केवल हरित आच्छादन नहीं, बल्कि वैश्विक खाद्य सुरक्षा के मूल स्तंभ हैं।

वर्तमान समय में पर्यावरणीय असंतुलन अपने चरम पर है। जलवायु परिवर्तन के कारण तापमान में वृद्धि, अनियमित वर्षा, सूखा, बाढ़ और प्राकृतिक आपदाओं की बढ़ती आवृत्ति ने मानव जीवन को संकटग्रस्त कर दिया है। इन परिस्थितियों में वन एक ऐसे प्राकृतिक तंत्र के रूप में सामने आते हैं, जो पृथ्वी के संतुलन को बनाए रखने में केंद्रीय भूमिका निभाते हैं। वे कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित कर वैश्विक तापवृद्धि को नियंत्रित करते हैं, जल चक्र को संतुलित रखते हैं और मृदा अपरदन को रोकते हैं। इसके बावजूद, विडंबना यह है कि मानव अपनी तात्कालिक आवश्यकताओं और आर्थिक विकास की अंधी दौड़ में वनों का अंधाधुंध दोहन कर रहा है। यही कारण है कि आज वन महोत्सव जैसे आयोजनों की आवश्यकता केवल औपचारिकता नहीं, बल्कि एक व्यापक सामाजिक जागरण के रूप में महसूस की जा रही है।

वनों की उपयोगिता का दायरा केवल पर्यावरणीय संतुलन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह आर्थिक और सामाजिक जीवन से भी गहराई से जुड़ा हुआ है। 2026 में प्रस्तावित 'वनों और अर्थव्यवस्था' थीम इस तथ्य को रेखांकित करती है कि वन सतत आर्थिक विकास के आधार हैं। लाखों लोगों की आजीविका सीधे तौर पर वनों पर निर्भर है। लघु वनोपज, औषधीय पौधे, रेजिन, गोंद, शहद और बांस जैसे उत्पाद न केवल ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाते हैं, बल्कि

अंतरराष्ट्रीय व्यापार में भी महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। इसके साथ ही, इको-टूरिज्म के माध्यम से भी रोजगार के नए अवसर उत्पन्न हो रहे हैं। इस प्रकार वन एक ऐसे आर्थिक संसाधन के रूप में सामने आते हैं, जो विकास और संरक्षण के बीच संतुलन स्थापित कर सकते हैं। वनों का सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व भी कम नहीं है। विशेष रूप से स्वदेशी और आदिवासी समुदायों के लिए वन जीवन का अभिन्न हिस्सा हैं। उनकी परंपराएँ, आस्थाएँ और जीवनशैली वनों से ही संचालित होती हैं। वन उनके लिए केवल संसाधन नहीं, बल्कि अस्तित्व का आधार हैं। इसी कारण, वन संरक्षण केवल पर्यावरणीय मुद्दा नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय और सांस्कृतिक संरक्षण का भी विषय है। वन महोत्सव जैसे आयोजन समाज के विभिन्न वर्गों को एक मंच पर लाकर इस साझा जिम्मेदारी का बोध कराते हैं कि वनों की रक्षा केवल सरकार का दायित्व नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक की नैतिक जिम्मेदारी है।

भारत के संदर्भ में वनों का महत्व और भी अधिक व्यापक और बहुआयामी है। यहाँ वन केवल प्राकृतिक संपदा नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और आध्यात्मिक चेतना का प्रतीक हैं। भारतीय परंपरा में वृक्षों को देवतुल्य माना गया है। पीपल, वट और नीम जैसे वृक्ष केवल जैविक इकाइयाँ नहीं, बल्कि जीवनदायी शक्ति के रूप में पूजे जाते हैं। भारत की समृद्ध जैव विविधता वनों पर ही निर्भर है, और इसका संरक्षण देश की पारिस्थितिक सुरक्षा के लिए अनिवार्य है। वन देश की जलवायु को संतुलित रखने, वर्षा चक्र को नियंत्रित करने और कृषि उत्पादन को स्थिर बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। भारत में वनों की उपयोगिता का एक महत्वपूर्ण पहलू यह भी है कि वे ग्रामीण और आदिवासी जीवन की आधारशिला हैं। देश के लाखों लोग अपनी आजीविका के लिए वनों पर निर्भर हैं। भोजन, ईंधन, चारा और औषधीय आवश्यकताओं की पूर्ति वनों के माध्यम से होती है। इसके अतिरिक्त, वन जल संरक्षण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जिससे नदियों और जल स्रोतों का अस्तित्व बना रहता है। आज जब देश के कई हिस्सों में जल संकट गहराता जा रहा है, तब वन संरक्षण की आवश्यकता और भी अधिक स्पष्ट हो जाती है।

वर्तमान शासनकाल में नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में वन संरक्षण और हरित विकास को लेकर कई महत्वपूर्ण पहलें की गई हैं। 'हरित भारत मिशन' के तहत बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण अभियान चलाए जा रहे हैं, जिनका उद्देश्य देश के वन क्षेत्र को बढ़ाना और पारिस्थितिक संतुलन को बनाए रखना है। 'नमामि गंगे' परियोजना के माध्यम से नदियों के किनारे वृक्षारोपण कर जल संरक्षण और प्रदूषण नियंत्रण के प्रयास किए गए हैं। इसके साथ ही, कैम्पा फंड के प्रभावी उपयोग से वन पुनर्स्थापन और संरक्षण कार्यों को गति मिली है। सरकार ने शहरी क्षेत्रों में भी हरित आवरण बढ़ाने के लिए मियावाकी पद्धति को प्रोत्साहित किया है, जिससे छोटे-छोटे स्थानों में घने वन विकसित किए जा रहे हैं। इन पहलों के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि वर्तमान समय में विकास और पर्यावरण संरक्षण को एक साथ लेकर चलने का प्रयास किया जा रहा है। सरकार की नीतियाँ यह दशार्ती हैं कि यदि सही दृष्टिकोण अपनाया जाए, तो आर्थिक विकास और पर्यावरणीय संतुलन के बीच सामंजस्य स्थापित किया जा सकता है। हालांकि, यह भी आवश्यक है कि इन प्रयासों में जनसहभागिता को और अधिक बढ़ाया जाए, क्योंकि वनों की सुरक्षा केवल सरकारी योजनाओं से संभव नहीं, बल्कि समाज के सामूहिक प्रयासों से ही सुनिश्चित की जा सकती है।

अंततः वन महोत्सव और अंतर्राष्ट्रीय वन दिवस हमें यह संदेश देते हैं कि प्रकृति के साथ संतुलन बनाए रखना ही मानव सभ्यता की स्थिरता का आधार है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम वनों को केवल संसाधन के रूप में न देखें, बल्कि उन्हें अपने जीवन का अभिन्न अंग मानें। जब तक यह दृष्टिकोण विकसित नहीं होगा, तब तक पर्यावरणीय संकटों का समाधान संभव नहीं है। यदि हम सचमुच अपने भविष्य को सुरक्षित रखना चाहते हैं, तो हमें वनों की रक्षा को अपनी प्राथमिकता बनाना होगा। यही वन महोत्सव की वास्तविक सार्थकता है और यही अंतर्राष्ट्रीय वन दिवस का मूल संदेश भी।

संपादकीय

खौफ का खेल

सिटी ब्यूटीफुल के नाम से मशहूर शहर चंडीगढ़ कुछ समय पहले तक, अपनी चाक-चौबंद सुरक्षा व्यवस्था के लिये मशहूर रहा है। इस शहर को लंबे समय तक हिंसा व अपराधों से सुरक्षित माना जाता रहा है। लेकिन विडंबना है कि अब यह तेजी से असुरक्षित होता जा रहा है। पिछले दिनों चंडीगढ़ का पॉश इलाका माने जाने वाले सेक्टर नौ में एक युवा प्रॉपर्टी डीलर की दिनदहाड़े हुई चौंकाने वाली हत्या ने शहर की शांति व्यवस्था पर सवालिया निशान लगाया। वहीं दूसरी ओर सुरक्षा की सावधानीपूर्वक बनायी गई इस केंद्रशासित प्रदेश की छवि को धूमिल किया है। निस्संदेह, इस केंद्र शासित प्रदेश के सबसे समृद्ध और सुरक्षित इलाकों में से एक सेक्टर में, इस तरह की सरेआम निर्मम हत्या होना न केवल चिंताजनक है, बल्कि यह बेहद गंभीर अपराध बढ़ने का संकेत भी देता है। शुरूआती रिपोर्टों में इस अपराध को गैंगस्टरों की आपसी दुश्मनी से जोड़ कर देखा जा रहा है। जिसमें लकी पटियाला और बबीहा गैंग जैसे नामों का जिक्र सामने आया है। यह हत्याकांड एक चिंताजनक प्रवृत्ति को रेखांकित करता है कि अब संगठित अपराध उन शहरी केंद्रों में लगातार बढ़ रहे हैं, जिन्हें कभी इस तरह की गैंगवार से अछूता समझा जाता था। माना जाता रहा है कि चंडीगढ़ पुलिस यथाशीघ्र अपराध की जड़ तक पहुंचकर अपराधियों पर शिंकजा कसने में सफल रहती है। यह चौंकाने वाली बात है कि हाल के वर्षों में पंजाब में गैंगवार में होने वाली हिंसा और जबरन वसूली के रैकेट में अप्रत्याशित वृद्धि देखी गई है। जिसका सबसे प्रमुख उदाहरण मशहूर सिंगर सिद्धू मूसेवाला की हत्या है। निस्संदेह, सेक्टर नौ में दिनदहाड़े हुई हत्या से साल 2017 में हुए आकांक्षा सेन हत्याकांड की टीस एक बार फिर उभर आई। यह भी एक ऐसा ही हाई-प्रोफाइल मामला था। जिसमें न्याय मिलने में लगातार हुई देरी के कारण आज भी लोगों के मन में गहरी कसक व्याप्त है। निस्संदेह, दोनों ही हत्याकांडों से जुड़ी समानताएं चिंता बढ़ाने वाली हैं। मसलन, अपराध सार्वजनिक रूप से हुए हैं। जिससे अपराध को रोकने की पुलिस की क्षमता पर सवाल उठाए गए हैं। इसमें एक सवाल जवाबदेही का भी है। वास्तव में इस तरह सरेआम दिन दहाड़े होने वाले अपराध सार्वजनिक विमर्श में कई संवेदनशील सवालों को जन्म देते हैं। इस घटना से जुड़ा सबसे चिंताजनक पहलू है हत्याकांड में शामिल रहे अपराधियों का दुस्साहस। निर्विवाद रूप से सार्वजनिक स्थल के बाहर दिन-दहाड़े की गई हत्या बताती है कि ये अपराधियों में कानून-व्यवस्था के प्रति डर समाप्त होने का संकेत है। जिसके परिणामस्वरूप कानून प्रवर्तन की निवारक क्षमता कमजोर हो जाती है। निस्संदेह, इस तरह की घटनाओं को लेकर खुफिया जानकारी जुटाने, पुलिस समन्वय और ऐसे हमलों को रोकने की क्षमता पर भी गंभीर सवाल उठते हैं। कोई शक नहीं कि चंडीगढ़ को अब किसी भी तरह की लापरवाही का शिकार बनने नहीं दिया जा सकता। प्रशासन को प्रतिक्रियात्मक पुलिसिंग के बजाय सक्रिय और खुफिया जानकारी आधारित रणनीति अपनानी होगी।

चिंतन-मनन

धर्म क्या है?

धर्म के मुख्यतः दो आयाम हैं। एक है संस्कृति, जिसका संबंध बाहर से है। दूसरा है अध्यात्म, जिसका संबंध भीतर से है। धर्म का तत्व भीतर है, मत बाहर है। तत्व और मत दोनों का जोड़ धर्म है। तत्व के आधार पर मत का निर्धारण हो, तो धर्म की सही दिशा होती है। मत के आधार पर तत्व का निर्धारण हो, तो बात कुरूप हो जाती है।

एक संत आता है। भीतर की गुफा में जाकर धर्म के तत्व अध्यात्म को जानता है। फिर वह चला जाता है। फिर मत बचा रहता है। उसके आधार पर एक संस्कृति विकसित होती है। संस्कृति के फूल खिलते हैं। काल प्रम में संस्कृति मुख्य हो जाती है। अध्यात्म गौण हो जाता है। और फिर एक संत को, एक जीवित संत को इस धरती पर आना पड़ता है। फिर से अंगारे जलाने होते हैं। फिर से दीप जलाना होता है।

जो दीप कभी जला था, उसके आधार पर जो गीत रह गए थे, वे पुराने पड़ जाते हैं। फिर से एक नया दीपक जलता है। नई रोशनी आती है। नया गीत फूटता है। नई नदी बहती है। सब कुछ नूतन हो जाता है। तो कहूँगा कि तुम जानो या न जानो, तुम सब धर्म के मार्ग पर ही हो। कोई व्यक्ति ऐसा नहीं हैं, जो धर्म के मार्ग पर नहीं है।

यह और बात है कि उसे पता है, या नहीं पता है। लेकिन धर्म का तत्व क्या है? धर्म का उद्गम क्या है? कहाँ पहुँचना है हमें? गंतव्य कहाँ है? उस बात को बताने के लिए ही संत इस धरती पर आता है। स्वामी विवेकानंद जी भी आए। और ये याद दिलाने के लिए आता है संत कि तुम कौन हो? अमृतस्य पुत्रा?। तुम राम-कृष्ण की संतान हो। तुम कबीर और गुरुनानक की संतान हो। तुम बुद्ध और महावीर की संतान हो। तुम क्यों दीन-हीन और दरिद्र जैसा जीवन जी रहे हो? क्यों अशांत हो, क्यों दुःखी हो? अपना स्वरूप हम भूल गए हैं। करीब-करीब ऐसे ही हम जीवन जीते हैं अपने वास्तविक स्वरूप को भूलकर।

राजस्थान का लोक उत्सव है गणगौर

रमेश सर्राफ धमोरा

राजस्थानी परम्परा के लोकोत्सव अपने में एक विरासत को संजोए हुए हैं। राजस्थान को देव भूमि कहा जाय तो गलत नहीं होगा। यहां सभी सम्प्रदाय फले फूले हैं। यहाँ के शासकों ने विश्व कल्याण की भावना से अभिभूत होकर लोक मान्यताओं का सम्मान किया है। इसी कारण यहां सभी देवी देवताओं के उत्सव बड़ी धूमधाम से मनाये जाते हैं। गणगौर का उत्सव भी ऐसा ही लोकोत्सव है। जिसकी पृष्ठ भूमि पौराणिक है। समय के प्रभाव से उनमें शास्त्राचार के स्थान पर लोकाचार हावी हो गया है। परन्तु भाव भंगिमा में कोई कमी नहीं आई है।

गणगौर भी राजस्थान का ऐसा ही एक प्रमुख लोक पर्व है। लगातार 17 दिनों तक चलने वाला गणगौर का पर्व मूलतः कुंवारी लड़कियों व महिलाओं का त्यौंहार है। राजस्थान की महिलाएं चाहे दुनिया के किसी भी कोने में हो गणगौर के पर्व को पूरी उत्साह के साथ मनाती है। विवाहिता एंव कुवारी सभी आयु वर्ग की महिलायें गणगौर की पूजा करती है। होली के दूसरे दिन से सोलह दिनों तक लड़कियां प्रतिदिन प्रातः काल ईसर-गणगौर को पूजती हैं। जिस लड़की की शादी हो जाती है वो शादी के प्रथम वर्ष अपने पीहर जाकर गणगौर की पूजा करती है। इसी कारण इसे सुहागपर्व भी कहा जाता है। गणगौर एक प्रमुख त्योहार है। यह मुख्य रूप से राजस्थान, हरियाणा, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश के ब्रज क्षेत्र में मनाया जाता है। गणगौर दो शब्दों गण और गौर से बना है। इसमें गण का अर्थ भगवान शिव और गौर का अर्थ माता पार्वती से है। इस दिन अविवाहित कन्याएं और विवाहित स्त्रियां भगवान शिव, माता पार्वती की पूजा करती हैं। साथ ही उपवास रखती हैं। कई क्षेत्रों में भगवान शिव को ईसर जी और देवी पार्वती को गौरा माता के रूप में पूजा जाता है। गौरा जी को गवरजा जी के नाम से भी जाना जाता है। धर्मग्रंथों के अनुसार श्रद्धाभाव से इस व्रत का पालन करने से अविवाहित कन्याओं को इच्छित वर की प्राप्ति होती है और विवाहित स्त्रियों के पति को दीघार्यु और आरोग्य की प्राप्ति होती है।

राजस्थान की राजधानी जयपुर में गणगौर उत्सव दो दिन तक धूमधाम से मनाया जाता है। सरकारी कार्यालयों में आधे दिन का अवकाश रहता है। ईसर और गणगौर की प्रतिमाओं की शोभायात्रा राजमहल से निकलती है। इनको देखने बड़ी संख्या में देशी-विदेशी सैनानी उमड़ते हैं। सभी उत्साह से भाग लेते हैं। इस उत्सव पर एकत्रित भीड़ जिस श्रद्धा एवं भक्ति के साथ धार्मिक अनुशासन में बंधी गणगौर की जय-जयकार करती हुई भारत की सांस्कृतिक परम्परा का निर्वाह करती है उसे देख कर अन्य धर्मावलम्बी भी इस संस्कृति के प्रति श्रद्धा भाव से ओतप्रोत हो जाते हैं। ढूंढाड़ की भाँति ही मेवाड़, हाड़ौती, शेखावाटी सहित इस मरुधर प्रदेश के विशाल नगरों में ही नहीं बल्कि गांव-गांव में गणगौर पर्व मनाया जाता है एवं ईसर-गणगौर के गीतों से हर घर गुंजायमान रहता है।

कहा जाता है कि चैत्र शुक्ला तृतीया को राजा हिमाचल की पुत्री गौरी का विवाह शंकर भगवान के साथ हुआ था। उसी की याद में यह त्यौहार मनाया जाता है। गणगौर व्रत गौरी तृतीया चैत्र शुक्ल तृतीया तिथि को किया जाता है। इस व्रत का राजस्थान में बड़ा महत्व है। कहते हैं इसी व्रत के दिन देवी पार्वती ने अपनी उंगली से रक्त निकालकर महिलाओं को सुहाग बांटा था। इसलिए महिलाएं इस दिन गणगौर की पूजा करती हैं। कामदेव मदन की पत्नी रति ने भगवान शंकर की तपस्या कर उन्हें प्रसन्न कर लिया तथा उन्हीं के तीसरे नेत्र से भष्म हुए अपने पति को पुनः जीवन देने की प्रार्थना की। रति की प्रार्थना से प्रसन्न हो भगवान शिव ने कामदेव को पुनः जीवित कर दिया तथा विष्णुलोक जाने का वरदान दिया। उसी की स्मृति में प्रतिवर्ष गणगौर का उत्सव मनाया जाता

है। गणगौर पर्व पर विवाह के समस्त नेगचार व रस्में की जाती है।

होलिका दहन के दूसरे दिन गणगौर पूजने वाली लड़कियां होली दहन की राख लाकर उसके आठ पिण्ड बनाती हैं एवं आठ पिण्ड गोबर के बनाती हैं। उन्हें दूब पर रखकर प्रतिदिन पूजा करती हुई दीवार पर एक काजल व एक रोली की टिकी लगाती हैं। शीतलाष्टमी तक इन पिण्डों को पूजा जाता है। फिर मिट्टी से ईसर गणगौर की मूर्तियां बनाकर उन्हें पूजती हैं। लड़कियां प्रातः ब्रह्ममुहुर्त में गणगौर पूजते हुये गीत गाती हैं।

कार्यस्थल, महिला स्वास्थ्य और मासिक धर्म अवकाश

डॉ. प्रियंका सौरभ

क्या अनिवार्य अवकाश नीति महिलाओं के अधिकारों को सशक्त बनाती है या उनके पेशेवर अवसरों को सीमित करने का जोखिम भी साथ लाती है?

मासिक धर्म स्त्री जीवन की एक स्वाभाविक जैविक प्रक्रिया है, किंतु लंबे समय तक इसे सामाजिक संकोच, मौन और उपेक्षा के दायरे में रखा गया। आधुनिक समय में जब कार्यस्थलों पर लैंगिक समानता, समावेशिता और संवेदनशील नीतियों की चर्चा तेज हुई है, तब 'अनिवार्य मासिक धर्म अवकाश' की अवधारणा भी विमर्श के केंद्र में आई है। कई देशों और संस्थानों ने महिलाओं को मासिक धर्म के दौरान विशेष अवकाश देने की नीतियाँ अपनाई हैं, ताकि वे शारीरिक असुविधा और मानसिक तनाव के समय आराम कर सकें। किंतु यह प्रश्न महत्वपूर्ण है कि क्या ऐसी अनिवार्य नीतियाँ वास्तव में कार्यस्थल पर समानता को बढ़ावा देती हैं, या फिर अनजाने में रोजगार में लैंगिक भेदभाव को और मजबूत कर देती हैं। इस संदर्भ में इस मुद्दे का आलोचनात्मक विश्लेषण आवश्यक है।

सबसे पहले यह समझना आवश्यक है कि मासिक धर्म के दौरान कई महिलाओं को शारीरिक पीड़ा, थकान, चक्कर, या हार्मोनल परिवर्तन के कारण मानसिक तनाव जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। ऐसे में कार्यस्थल पर निरंतर काम करना उनके लिए कठिन हो सकता है। अनिवार्य मासिक धर्म अवकाश की नीति का मुख्य उद्देश्य महिलाओं के स्वास्थ्य और गरिमा की रक्षा करना है। यह नीति इस बात को स्वीकार करती है कि महिलाओं की जैविक आवश्यकताएँ भिन्न होती हैं और उन्हें उसी अनुसार कार्यस्थल पर सहूलियत मिलनी चाहिए। इस दृष्टि से यह नीति लैंगिक संवेदनशीलता का प्रतीक है और महिलाओं के प्रति सहानुभूति और सम्मान को बढ़ावा देती है।

इसके अतिरिक्त, अनिवार्य मासिक धर्म अवकाश कार्यस्थलों पर लंबे समय से चले आ रहे उस मौन को भी तोड़ने का प्रयास है, जिसमें मासिक धर्म को छिपाने या शर्म की चीज माना जाता था। जब संस्थान औपचारिक रूप से इस विषय को स्वीकार करते हैं, तब यह सामाजिक स्तर पर भी एक सकारात्मक संदेश देता है कि मासिक धर्म कोई कमजोरी नहीं बल्कि एक प्राकृतिक प्रक्रिया है। इससे महिलाओं को अपनी समस्याओं के बारे में खुलकर बात करने का साहस मिलता है और कार्यस्थल का वातावरण अधिक मानवीय और संवेदनशील बन सकता है।

कुछ विशेषज्ञों का यह भी मानना है कि ऐसी नीतियाँ कार्यस्थलों पर उत्पादकता को भी अप्रत्यक्ष रूप से बढ़ा सकती हैं। जब कर्मचारियों को आवश्यकता के समय आराम मिलता है, तो वे स्वस्थ होकर बेहतर तरीके से काम कर पाते हैं। यदि किसी महिला को मासिक धर्म के दौरान अत्यधिक दर्द या असुविधा है और फिर भी उसे काम करना पड़ता है, तो उसका प्रदर्शन प्रभावित हो सकता है। ऐसे में अल्पकालिक अवकाश उसे शारीरिक और मानसिक रूप से संतुलित करने में सहायक हो सकता है। इस प्रकार, स्वास्थ्य के प्रति संवेदनशील नीतियाँ दीर्घकालिक दृष्टि से संस्थानों के लिए भी लाभकारी सिद्ध हो सकती हैं।

हालाँकि, इस नीति के पक्ष में प्रस्तुत इन तर्कों के साथ-साथ इसके संभावित नकारात्मक प्रभावों को भी गंभीरता से समझना आवश्यक है। कई आलोचकों का मानना है कि अनिवार्य मासिक धर्म अवकाश नीतियाँ अनजाने में रोजगार में लैंगिक भेदभाव को बढ़ावा दे सकती हैं। यदि किसी संस्थान को यह लगता है कि महिला कर्मचारियों को हर महीने अतिरिक्त अवकाश देना पड़ेगा, तो वह भर्ती के समय पुरुष उम्मीदवारों को प्राथमिकता दे सकता है। विशेष रूप से निजी क्षेत्र में, जहाँ उत्पादकता और समय-प्रबंधन को अत्यधिक महत्व दिया जाता है, वहाँ नियोक्ता महिलाओं को 'अतिरिक्त दायित्व' के रूप में देखने लग सकते हैं।

इस दृष्टिकोण से यह भी कहा जाता है कि अनिवार्य अवकाश की नीति महिलाओं को 'कम सक्षम' या 'कम विश्वसनीय' कर्मचारी के रूप में प्रस्तुत कर सकती है। यह धारणा बन सकती है कि महिलाएँ हर महीने कुछ दिनों तक कार्य के लिए अनुपलब्ध रहेंगी, जिससे उनके प्रति नियोक्ताओं का दृष्टिकोण नकारात्मक हो सकता है। परिणामस्वरूप, महिलाओं को उच्च पदों, नेतृत्व की भूमिकाओं या महत्वपूर्ण परियोजनाओं में अवसर कम मिल सकते हैं। इस प्रकार, जो नीति महिलाओं के हित में बनाई जाती है, वही अनजाने में उनके पेशेवर विकास के रास्ते में बाधा बन सकती है।

एक और महत्वपूर्ण आलोचना यह है कि सभी महिलाओं का मासिक धर्म अनुभव समान नहीं होता। कुछ महिलाओं को इस दौरान अत्यधिक पीड़ा होती है, जबकि कई महिलाएँ सामान्य रूप से अपने कार्य कर सकती हैं। यदि अवकाश अनिवार्य बना दिया जाए, तो यह उन महिलाओं के लिए भी लागू होगा जिन्हें इसकी आवश्यकता नहीं है। इससे यह संदेश जा सकता है कि मासिक धर्म के दौरान हर महिला कार्य करने में असमर्थ होती है, जो वास्तविकता से मेल नहीं खाता। इसलिए कई विशेषज्ञ मानते हैं कि 'अनिवार्य' शब्द स्वयं में समस्या पैदा कर सकता है।

इसके अलावा, यह भी तर्क दिया जाता है कि यदि कार्यस्थलों पर केवल महिलाओं के लिए विशेष अवकाश की व्यवस्था की जाती है, तो यह समानता के सिद्धांत के साथ विरोधाभास पैदा कर सकती है। लैंगिक समानता का मूल विचार यह है कि सभी कर्मचारियों को समान अवसर और समान सम्मान मिले। यदि किसी एक समूह को विशेषाधिकार दिए जाते हैं, तो दूसरे समूह में असंतोष या असमानता की भावना उत्पन्न हो सकती है। हालांकि यह तर्क पूरी तरह से उचित नहीं माना जा सकता, क्योंकि समानता का अर्थ हमेशा 'समान व्यवहार' नहीं बल्कि 'न्यायसंगत व्यवहार' भी होता है, फिर भी इस दृष्टिकोण को नीति निर्माण में ध्यान में रखना आवश्यक है।

कई देशों के अनुभव भी इस बहस को जटिल बनाते हैं। कुछ स्थानों पर मासिक धर्म अवकाश की नीति लागू होने के बावजूद महिलाओं ने इसका उपयोग कम किया है, क्योंकि उन्हें डर होता है कि इससे उनके प्रति नकारात्मक धारणा बन सकती है। इससे यह स्पष्ट होता है कि केवल नीति बनाना पर्याप्त नहीं है; कार्यस्थल की संस्कृति और मानसिकता भी उतनी ही महत्वपूर्ण होती है। यदि संस्थान का वातावरण संवेदनशील और सहयोगी नहीं है, तो कर्मचारी उपलब्ध सुविधाओं का लाभ उठाने में संकोच कर सकते हैं।

इस संदर्भ में कुछ विशेषज्ञ 'अनिवार्य मासिक धर्म अवकाश' के बजाय 'लचीली और वैकल्पिक नीति' का समर्थन करते हैं। उनका मानना है कि कर्मचारियों को यह स्वतंत्रता दी जानी चाहिए कि वे अपनी शारीरिक स्थिति के अनुसार अवकाश ले सकें। उदाहरण के लिए, सामान्य चिकित्सा अवकाश या लचीले कार्य समय की व्यवस्था ऐसी हो सकती है जिसमें महिला कर्मचारी आवश्यकता पड़ने पर घर से काम कर सकें या कुछ समय के लिए विश्राम ले सकें। इस प्रकार की व्यवस्था व्यक्तिगत जरूरतों का सम्मान करती है और साथ ही अनिवार्यता से उत्पन्न होने वाली समस्याओं को भी कम कर सकती है।

इसके साथ ही, कार्यस्थलों पर मासिक धर्म से जुड़ी बुनियादी सुविधाओं की उपलब्धता भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। स्वच्छ शौचालय, सैनिटरी उत्पादों की उपलब्धता, और संवेदनशील कार्य वातावरण महिलाओं के लिए अत्यधिक सहायक हो सकते हैं। कई बार अवकाश से अधिक महत्वपूर्ण यह होता है कि कार्यस्थल ऐसा हो जहाँ महिलाएँ बिना झिझक अपनी आवश्यकताओं के बारे में बात कर सकें और उन्हें आवश्यक सहयोग मिल सके।

वास्तव में, इस पूरी बहस का मूल प्रश्न यह है कि समानता का अर्थ क्या है। क्या समानता का अर्थ यह है कि सभी कर्मचारियों के साथ बिल्कुल समान व्यवहार किया जाए, या फिर यह कि उनकी भिन्न आवश्यकताओं को समझते हुए उन्हें न्यायसंगत सुविधाएँ दी जाएँ? आधुनिक नारीवादी दृष्टिकोण यह मानता है कि वास्तविक समानता तभी संभव है जब जैविक और सामाजिक अंतर को ध्यान में रखते हुए नीतियाँ बनाई जाएँ। इस दृष्टि से मासिक धर्म अवकाश का विचार पूरी तरह से अनुचित नहीं है। लेकिन इसे इस प्रकार लागू करना आवश्यक है कि यह महिलाओं को कमजोर या कम सक्षम साबित करने के बजाय उनकी गरिमा और अधिकारों को मजबूत करे।

अंततः यह कहा जा सकता है कि अनिवार्य मासिक धर्म अवकाश नीतियाँ एक जटिल और बहुआयामी मुद्दा प्रस्तुत करती हैं। एक ओर वे महिलाओं के स्वास्थ्य, गरिमा और संवेदनशीलता को मान्यता देती हैं, वहीं दूसरी ओर वे अनजाने में रोजगार में लैंगिक भेदभाव को बढ़ावा देने का जोखिम भी पैदा कर सकती हैं। इसलिए नीति निर्माण में संतुलित और व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक है। अनिवार्यता के बजाय लचीली नीतियाँ, जागरूकता, और संवेदनशील कार्यस्थल संस्कृति इस दिशा में अधिक प्रभावी समाधान हो सकते हैं।

समाज और संस्थानों को यह समझना होगा कि मासिक धर्म कोई बाधा नहीं बल्कि जीवन की स्वाभाविक प्रक्रिया है। यदि कार्यस्थल ऐसी नीतियाँ विकसित करें जो महिलाओं के स्वास्थ्य का सम्मान करें और साथ ही उनकी पेशेवर क्षमताओं पर विश्वास बनाए रखें, तभी वास्तविक लैंगिक समानता की दिशा में सार्थक कदम उठाया जा सकेगा।

(लेखिका, पीएचडी (राजनीति विज्ञान), कवयित्री एवं सामाजिक चिंतक हैं।)

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

वैश्विक व्यापार वृद्धि में गिरावट का खतरा- डब्ल्यूटीओ चेतावनी

नई दिल्ली।

डब्ल्यूटीओ (विश्व व्यापार संगठन) ने चेतावनी दी है कि पश्चिम एशिया में जारी संघर्ष और ऊंची ऊर्जा कीमतों के कारण वैश्विक व्यापार की वृद्धि दर 2026 में 1.9 फीसदी रह सकती है, जबकि 2025 में यह 4.6 फीसदी थी। यात्रा और परिवहन में रुकावटों से खाद्य आपूर्ति और सेवाओं के व्यापार पर दबाव बढ़ सकता है। इसके साथ ही, पिछले साल एआई से जुड़े उत्पादों की बढ़ी मांग और शुल्कों से बचाव के कारण आयात में आई तेजी अब सामान्य होने की ओर बढ़ रही है। यह पूर्वानुमान भारत जैसे निर्यातक देशों के लिए चिंता का विषय है। डब्ल्यूटीओ महानिदेशक नगोजी ओकोन्जो इवेला ने कहा कि ऊंची ऊर्जा कीमतें और संघर्ष वैश्विक व्यापार के लिए जोखिम बढ़ा रहे हैं, जिससे खाद्य सुरक्षा और उपभोक्ताओं पर लागत का दबाव बढ़ सकता है।

अमेरिका ने मिनेसोटा में मेसाबी मेटैलिक्स परियोजना के लिए 10 अरब डॉलर का समर्थन किया

एक एकीकृत लौह अयस्क खनन और प्रसंस्करण संयंत्र के निर्माण की है परियोजना

वॉशिंगटन। अमेरिका ने मिनेसोटा में एस्सार समूह की कंपनी मेसाबी मेटैलिक्स को 10 अरब अमेरिकी डॉलर तक के वित्तीय समर्थन की घोषणा की है। यह परियोजना एक एकीकृत लौह अयस्क खनन और प्रसंस्करण संयंत्र के निर्माण की है, जो सालाना लगभग 70 लाख टन उच्च गुणवत्ता वाले प्रत्यक्ष अपचयन लौह अयस्क पेलेट्स का उत्पादन करेगी। ये पेलेट्स आधुनिक इस्पात निर्माण के लिए आवश्यक हैं और परियोजना से अमेरिका में सैकड़ों नई नौकरियां उत्पन्न होंगी। अमेरिकी निर्यात-आयात बैंक (एक्जिम) ने बताया कि उनका यह समर्थन करीब 30 अरब डॉलर के रणनीतिक समझौतों को आगे बढ़ाएगा, जिनका उद्देश्य अमेरिका की आपूर्ति श्रृंखला सुरक्षा को मजबूत करना है। यह पहल हिंद-प्रशांत सहयोगियों के साथ रणनीतिक आर्थिक संबंधों को भी प्रोत्साहित करती है। तोकीयो में आयोजित हिंद-प्रशांत ऊर्जा सुरक्षा मंच में एक्जिम के चेयरमैन जॉन जोवानोविच, आंतरिक मामलों के मंत्री डग बर्गम और पर्यावरण एजेंसी की प्रमुख ली जेल्डिन ने भाग लिया। एक्जिम ने जापान और दक्षिण कोरिया में परमाणु ऊर्जा संचालकों को 4.2 अरब डॉलर तक के संभावित वित्तपोषण के लिए रुचि पत्र जारी किए। यह अमेरिकी समृद्ध यूरेनियम की खरीद और सुरक्षित परमाणु ईंधन आपूर्ति श्रृंखला को मजबूत करने में मदद करेगा। ऑस्ट्रेलिया में आरजेड रिसोर्सेज कोपी परियोजना से टाइटेनियम, जिरकॉन और अन्य रणनीतिक खनिजों का उत्पादन होने की उम्मीद है। इन खनिजों का उपयोग उन्नत विनिर्माण और रक्षा आपूर्ति श्रृंखलाओं में किया जाएगा। एक्जिम का यह समर्थन अमेरिका के ऊर्जा प्रभुत्व एजेंडा, ऊर्जा आपूर्ति के विस्तार और घरेलू उद्योग व समुद्री क्षमताओं को मजबूत करने के उद्देश्य को आगे बढ़ाता है। इन पहलों के माध्यम से हिंद-प्रशांत क्षेत्र में सहयोगी देशों के साथ रणनीतिक साझेदारी भी मजबूत हो रही है।

जम्मू-कश्मीर में अप्रैल में होगा 'कश्मीर ट्रैवल मार्ट-2026'

श्रीनगर ।

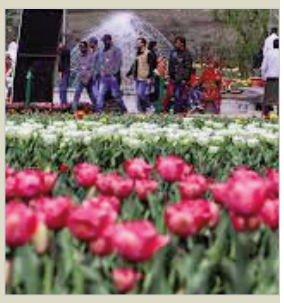

जम्मू-कश्मीर पर्यटन विभाग इस अप्रैल में 'कश्मीर ट्रैवल मार्ट-2026' का आयोजन करेगा। इसका उद्देश्य क्षेत्र की पर्यटन संभावनाओं और प्राकृतिक सुंदरता को प्रदर्शित करना है। मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर बताया कि इस आयोजन में देशभर के 20 से अधिक राज्यों से लगभग 250 हितधारक भाग लेंगे। इसमें होटल, यात्रा एजेंसी, और पर्यटन विशेषज्ञ शामिल होंगे। मुख्यमंत्री ने कहा कि यह पहल पर्यटन संबंधों को मजबूत करने और कश्मीर को विश्वस्तरीय पर्यटन स्थल के रूप में स्थापित करने में मदद करेगी। यह आयोजन निवेशकों, पर्यटन उद्योग के विशेषज्ञों और सरकार के लिए कश्मीर की सुविधाओं, स्थलों और निवेश अवसरों को प्रदर्शित करने का अवसर देगा। कश्मीर पर्यटन को बढ़ावा देने की दिशा में यह एक महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है।

भारत ने दुर्लभ खनिज चुंबक निर्माण के लिए 7,280 करोड़ की योजना शुरू की

भारत को दुर्लभ खनिज आधारित चुंबक उत्पादन में आत्मनिर्भर बनाने का लक्ष्य

नई दिल्ली ।

भारत सरकार ने देश में सिंटर्ड रियर अर्थ परमानेंट मैग्नेट (आरईपीएम) निर्माण के लिए एक महत्वाकांक्षी योजना की शुरुआत की है। इसका लक्ष्य भारत को दुर्लभ खनिज आधारित चुंबक उत्पादन में आत्मनिर्भर बनाना और चीन पर आयात निर्भरता कम करना है। योजना के तहत 6,000 मीट्रिक टन प्रतिवर्ष (एमटीपीए) क्षमता वाले संयंत्र स्थापित किए जाएंगे। भारी उद्योग मंत्रालय ने एकीकृत एनडीएफईबी (नियोडिमियम-आयरन-बोरोन) संयंत्र स्थापित करने के लिए प्रस्ताव आमंत्रित किए हैं। बोली प्रक्रिया केंद्रीय सार्वजनिक खरीद मंच के माध्यम से ऑनलाइन और पारदर्शी न्यूनतम लागत प्रणाली में संचालित होगी। तकनीकी और वित्तीय दो चरण होंगे। बोली से पूर्व बैठक 7 अप्रैल 2026 को होगी, बोलियां जमा करने की अंतिम तिथि 28 मई 2026 है, और तकनीकी बोली 29 मई 2026 को खोली जाएगी। यनित लाभार्थियों को पूंजी अनुदान और बिक्री-आधारित प्रोत्साहन मिलेगा। प्रत्येक लाभार्थी को 600-1,200 एमटीपीए क्षमता आवंटित की जाएगी। सरकार ने पूंजी अनुदान के लिए 750 करोड़ रुपये और बिक्री-आधारित प्रोत्साहन के लिए 6,450 करोड़ रुपये आवंटित किए हैं। इसके अलावा, तीन सबसे कम बोली लगाने वालों को आईआरईएल इंडिया से एनडीपीआर ऑक्साइड की सीमित आपूर्ति सुनिश्चित की जाएगी। आरईपएम चुंबक विद्युत वाहन, पवन टरबाइन, उन्नत इलेक्ट्रॉनिक्स, अंतरिक्ष और रक्षा क्षेत्रों में इस्तेमाल होते हैं। इस पहल से भारत में पूर्ण घरेलू मूल्य श्रृंखला विकसित होगी और देश वैश्विक दुर्लभ खनिज बाजार में एक महत्वपूर्ण खिलाड़ी बन सकेगा।

ऋूड तेल का भाव 180 डालर तक पहुंच सकता है!

होर्मुज संकट वैश्विक बाजार के लिए चुनौती

नई दिल्ली । मिडिल ईस्ट में बढ़ते तनाव ने वैश्विक तेल बाजार को अस्थिर कर दिया है। ईरान के साउथ पार्स गैस फील्ड पर हमले के जवाब में तेहरान ने सऊदी अरब और कतर के प्रमुख ऊर्जा ठिकानों को निशाना बनाया। यानबु स्थित तेल टर्मिनल रणनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है क्योंकि यह होर्मुज जलडमरूमध्य को बायपास करने वाली पाइपलाइन का अंतिम बिंदु है। इन हमलों के कारण होर्मुज जलडमरूमध्य लगभग बंद होने की कगार पर है, जिससे तेल और गैस की सप्लाई प्रभावित हो रही है। विशेषज्ञों का कहना है कि लगातार सप्लाई बाधाओं के कारण ऋूड तेल की कीमत 180 डॉलर प्रति बैरल तक जा सकती है। इससे तेल उत्पादक देशों की आमदनी बढ़ेगी, लेकिन इतनी ऊंची कीमतें रिन्यूएबल एनर्जी की ओर तेजी से शिफ्टिंग को बढ़ावा दे सकती हैं और लंबे समय में तेल की मांग घटा सकती हैं। महंगी ऊर्जा वैश्विक मुद्रास्फीति को बढ़ा सकती है और आर्थिक सुस्ती का खतरा पैदा कर सकती है। सऊदी अरब बाजार में स्थिरता बनाए रखने के लिए कीमतों में बहुत तेज बढ़ोतरी नहीं चाहता। सउदी अरामको ने सार्वजनिक तौर पर स्थिति पर टिप्पणी नहीं की, लेकिन अंदरखाने संभावित ऑयल शॉक से निपटने की तैयारी तेज कर दी गई है। इसका मकसद वैश्विक हिस्सेदारी सुरक्षित रखना और बाजार में संतुलन बनाए रखना है।अगर हालात जल्द सामान्य नहीं हुए, तो दुनिया को महंगे तेल, बढ़ती महंगाई और आर्थिक सुस्ती का सामना करना पड़ सकता है। करना पड़ सकता है।

शेयर बाजार बढ़त के साथ बंद

सेंसेक्स 325, निफ्टी 112 अंक उछला

मुंबई ।

भारतीय शेयर बाजार शुक्रवार को हल्की बढ़त बंद हुआ। सप्ताह के अंतिम कारोबारी दिन दुनिया भर से मिले-जुले संकेतों के बाद भी खरीददारी हावी होने से दिन के अंत में 30 शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स 325.72 अंक बढ़कर 74,532.96 और 50 शेयरों वाला एनएसई निफ्टी 112.35 अंक बढ़कर 23,114.50 पर बंद हुआ था। वहीं गत दिवस बाजार भारी गिरावट पर बंद हुआ था। वहीं आज बाजार में आईटी और पीएसयू बैंकिंग शेयरों में तेजी रही। सूचकांकों में निफ्टी आईटी 2.17 फीसदी और निफ्टी पीएसयू बैंक 2.07 फीसदी बढ़कर लाभ में रहे। निफ्टी फार्मा 1.99 फीसदी , निफ्टी हेल्थकेयर 1.89 फीसदी , निफ्टी मेटल 1.45 फीसदी , निफ्टी कमोडिटीज 1.28 फीसदी और निफ्टी इन्फ्रा 0.96 फीसदी बढ़कर बंद हुए। वहीं निफ्टी रियल्टी 0.93 फीसदी , निफ्टी इंडिया डिफेंस 0.73 फीसदी , निफ्टी फाइनेंशियल सर्विस 0.68 फीसदी और निफ्टी प्राइवेट बैंक 0.52 फीसदी की गिरावट के साथ बंद हुआ।आज लार्जकैप के साथ ही मिडकैप और स्मॉलकैप में तेजी रही। निफ्टी मिडकैप 100 इंडेक्स 363.20 अंक बढ़कर 54,855.50 और निफ्टी स्मॉलकैप 100 इंडेक्स 14.35 अंक उछलकर 15,718.60 पर बंद हुआ।सेंसेक्स के शेयरों में टाटा स्टील, टेक महिंद्रा, इन्फोसिस, ट्रेंट, टाइटन, एनटीपीसी, सनफार्मा, एचसीएल टेक, इटरनल, टीसीएस, अल्ट्राटेक सीमेंट, एमएंडएम, भारती एयरटेल और अदाणी पोर्ट्स के शेयर लाभ में रहे जबकि एचडीएफसी बैंक, बीईएल, कोटक महिंद्रा बैंक,

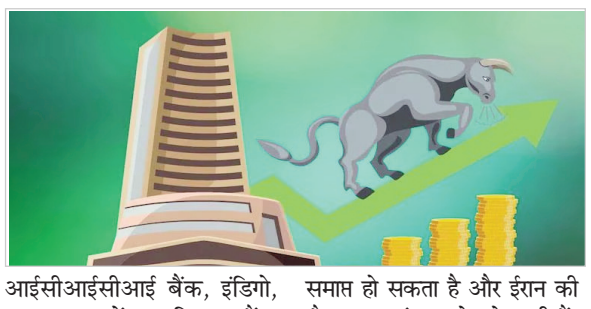

आईसीआईसीआई बैंक, इंडिगो, बजाज फाइनेंस, एक्सिस बैंक और एलएंडटी के शेयर नीचे आये। इससे पहले आज सुबह बाजार की अच्छी शुरुआत हुई। सुबह बीएसई सेंसेक्स 790.56 अंक बढ़कर 74,997.80 पर खुला। वहीं निफ्टी भी 208.05 अंक चढ़कर 23,210.20 के स्तर पर पहुंच गया। ।

यह गिरावट पिछले 21 दिनों की सबसे बड़ी एकदिवसीय गिरावट रही। पश्चिम एशिया में बढ़ते तनाव के बीच बेंजो मिन नेतन्याहू ने कहा कि संघर्ष जल्द समाप्त हो सकता है और ईरान की सैन्य क्षमताएं कमजोर हो चुकी हैं। उन्होंने यह भी संकेत दिया कि इजरायल अब बिजली ढांचे को निशाना नहीं बनाएगा। वहीं डोनाल्ड ट्रम्प ने स्पष्ट किया कि अमेरिका फिलहाल किसी भी क्षेत्र में सैनिक नहीं भेज रहा है। इन बयानों से वैश्विक बाजारों में कुछ स्थिरता देखने को मिली है, जिसका असर भारतीय बाजार की मजबूती पर भी पड़ा। । शुरुआती कारोबार में आईटी और मेटल सेक्टर के शेयरों में सबसे ज्यादा तेजी देखने को मिली।

रसोई गैस बुकिंग में नए नियम लागू, बुकिंग के समय में किया गया बदलाव

सुबह 5 से 7 और रात 8 से 12 बजे के बीच कॉल या मैसेज स्वीकार किए जाएंगे

नई दिल्ली ।

अब रसोई गैस सिलेंडर की बुकिंग पूरे दिन नहीं होगी। ग्राहकों को केवल दो तय समय स्लॉट में ही बुकिंग करनी होगी। सुबह 5 बजे से 7 बजे और रात 8 बजे से 12 बजे के बीच कॉल या मैसेज स्वीकार किए जाएंगे। सुबह 7 बजे से रात 8 बजे तक लगभग 13 घंटे बुकिंग की सुविधा बंद रहेगी। विशेषज्ञों का कहना है कि सिलेंडर खत्म होने से पहले अलार्म लगाना समझदारी भरा कदम है। नई व्यवस्था में बुकिंग केवल तभी स्वीकार की जाएगी जब आपके पिछले सिलेंडर की डिलीवरी को कम से कम 25 दिन बीत चुके हों। यदि इस अवधि से पहले बुकिंग करने की कोशिश करेंगे, तो सिस्टम इसे रिजेक्ट कर देगा। इसका उद्देश्य सिलेंडर वितरण में व्यवधान को कम करना और सभी ग्राहकों तक समय पर आपूर्ति सुनिश्चित करना है। गैस कंपनियों ने डिजिटल माध्यमों से बुकिंग को सरल बनाया है। विभिन्न कंपनियों ने डिजिटल माध्यमों से बुकिंग को काफी सरल बना दिया है। भारत गैस के ग्राहक 1800224344 पर व्हाट्सऐप के जरिए एचआई भेजकर सिलेंडर मंगवा सकते हैं। इसी तरह इन्डेन गैस के लिए 75888-88824 पर` रि फिल लिखकर और एचपी गैस के लिए 92222-01122 पर बुक लिखकर मैसेज करना होगा। अगर आप सामान्य एसएमएस का इस्तेमाल करना चाहते हैं, तो भारत गैस के लिए 77150-12345 और इन्डेन के लिए 77189-55555 पर अपना संदेश भेजकर कन्फर्मेशन प्राप्त कर सकते हैं। जिन लोगों के पास इंटरनेट नहीं है या जो व्हाट्सऐप इस्तेमाल नहीं करना चाहते, उनके लिए मिस्ड कॉल की सुविधा भी मौजूद है। भारत गैस के लिए 77180-12345, इन्डेन के लिए 84549-55555 और एचपी गैस के लिए 949360-22222 पर केवल

एक कॉल देकर आप अपनी बुकिंग दर्ज करा सकते हैं। अगर आपको सिलेंडर मिलने में परेशानी हो रही है या कोई अन्य शिकायत है, तो आप टोल-फ्री हेल्पलाइन नंबरों का सहारा ले सकते हैं। इन्डेन और एचपी गैस के लिए 18002333555 और भारत गैस के ग्राहकों के लिए 1800224344 नंबर जारी किया गया है।

एसबीआई फंड्स ने आईपीओ के लिए सेबी के पास दस्तावेज जमा किए

नई दिल्ली ।

एसबीआई फंड्स मैनेजमेंट ने अपनी आरंभिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ) के लिए सेबी में प्रारंभिक दस्तावेज (डीआरएचपी) जमा किए हैं। यह आईपीओ पूरी तरह से बिक्री पेशकश (ओएफएस) पर आधारित है, जिसमें 20.37 करोड़ इक्विटी शेयर बिक्री के लिए रखे जाएंगे। इसमें कोई नया शेयर जारी नहीं किया जाएगा। आईपीओ के माध्यम से मौजूदा शेयरधारक अपने हिस्से का विक्रय करेंगे। इसमें प्रमुख प्रवर्तक हैं भारतीय स्टेट बैंक (एचबीआई) और अमुंडी इंडिया होल्डिंग। इस निर्गम के लिए मर्चेंट बैंकर्स का समूह नियुक्त किया गया है, जिसमें कोटक महिंद्रा कैपिटल, एक्सिस कैपिटल, बोफा सिक्योरिटीज इंडिया, एचएसबीसी सिक्योरिटीज, आईसीआईसीआई सिक्योरिटीज, जेफरीज इंडिया, जेएम फाइनेंशियल, मोतीलाल ओसवाल और एसबीआई कैपिटल मार्केट्स शामिल हैं।

ईरान-इजरायल संघर्ष के बाद कच्चा तेल 118 डॉलर प्रति बैरल पहुंचा प्रूडेंशियल भारत में आईसीआईसीआई लाइफ से निकलेगा बाहर

नई दिल्ली ।

ईरान-इजरायल संघर्ष के बाद अंतरराष्ट्रीय तेल कीमतों में तेजी आई। ब्रेंट क्रूड की कीमत युद्ध शुरू होने के बाद से 60 प्रतिशत से अधिक बढ़कर 118 डॉलर प्रति बैरल तक पहुंच गई। होर्मुज स्ट्रेट में ईरानी अवरोध पहले ही आपूर्ति को दबाव में डाल रहे थे, अब इन हमलों से वैश्विक बाजार और अस्थिर हो गया है। कतर, सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात ने ईरानी हमलों की निंदा की। अरब लीग के महासचिव अहमद अबूल घीत ने इसे खतरनाक उकसावे वाला बताया। ईरान ने अपने प्रमुख गैस क्षेत्र साउथ पार्स पर इजरायली हमले के जवाब में खाड़ी देशों में तेल और गैस प्रतिष्ठानों पर हमले बढ़ा दिए हैं। इन हमलों में शामिल हैं संयुक्त अरब अमीरात के तट के पास एक जहाज में आग लगना, कतर के पास एक अन्य जहाज को क्षति, और सऊदी अरब की यानबू रिफाइनरी पर ड्रोन हमला। इससे क्षेत्रीय तनाव और बढ़ गया है और वैश्विक ऊर्जा आपूर्ति पर दबाव बढ़ गया है। अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप ने आश्वासन दिया कि इजरायल और हमले नहीं करेगा, लेकिन चेतावनी दी कि अगर ईरान ने कतर पर हमला किया तो

अमेरिका पूरे क्षेत्र में जवाबी कार्रवाई करेगा। पेंटागन ने ईरान युद्ध के लिए 200 अरब डॉलर का अतिरिक्त बजट मांगा। ईरानी राष्ट्रपति मसूद पेजेश्कियन ने हमलों के अनियंत्रित परिणाम होने की चेतावनी दी, जो पूरी दुनिया को प्रभावित कर सकते हैं।

केंद्र सरकार ने राज्यों को पीएनजी नेटवर्क विस्तार के लिए प्रोत्साहित किया

10 फीसदी अतिरिक्त वाणिज्यिक एलपीजी का प्रस्ताव

नई दिल्ली ।

केंद्र सरकार ने राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को निर्देश दिया है कि यदि वे अपने क्षेत्र में पाइप्ड नैचुरल गैस (पीएनजी) नेटवर्क का विस्तार करेंगे, तो उन्हें 10 फीसदी अतिरिक्त वाणिज्यिक एलपीजी आवंटित की जाएगी। पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय की संयुक्त सचिव सुजाता शर्मा ने इस योजना की जानकारी दी। यह कदम ऐसे समय में उठाया गया है जब पश्चिम एशिया में युद्ध के कारण एलपीजी की आपूर्ति प्रभावित हो रही है। भारत अपनी घरेलू एलपीजी खपत का लगभग 60 फीसदी आयात करता है, जिसमें से करीब 90 फीसदी आपूर्ति पश्चिम एशिया से होती है। सरकार ने कहा कि जो राज्य शहरी गैस वितरण समितियों की स्थापना

करेंगे, लंबित और नई अनुमतियों को समय पर निपटाएंगे, उन्हें 1-2 फीसदी अतिरिक्त गैस का लाभ मिलेगा। राज्यों को निर्देश हैं कि वे लंबित आवेदनों के लिए डीम्ड अनुमतियां जारी करें, नई अनुमतियों को 24 घंटे में मंजूरी दें, सड़क नेटवर्क बिछाएं, शुल्क माफ करें और समन्वय के लिए नोडल अधिकारियों की नियुक्ति करें। इन कदमों से शहरी गैस वितरण नेटवर्क का विस्तार तेज होगा।

सरकार का उद्देश्य घरेलू, वाणिज्यिक और औद्योगिक उपभोक्ताओं के लिए पीएनजी कनेक्शन बढ़ाना और एलपीजी पर विदेशी निर्भरता कम करना है। अधिकारियों का कहना है कि यह कदम ऊर्जा सुरक्षा को मजबूत करने और देश में गैस वितरण सुधारने में मदद करेगा। इसी बीच भारत ईरान के साथ समन्वय कर होर्मुज स्ट्रेट में फंसे टैंकरों की सुरक्षित निकासी सुनिश्चित करने का प्रयास कर रहा है।

पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय के विशेष सचिव राजेश कुमार सिन्हा ने बताया कि एलएनजी का 1 टैंकर, एलपीजी के 6 टैंकर और कच्चे तेल के 4 पोत फंसे हुए हैं। युद्ध के बाद कुछ टैंकर रूस से कच्चा तेल लेकर भारत की ओर मोड़ दिए गए हैं।

पश्चिम एशिया संकट के बीच निर्यातकों को राहत, केंद्र ने रिलीफ योजना की मंजूर

बढ़ती लॉजिस्टिक्स लागत और जोखिम से जूझ रहे निर्यातकों को बीमा कवर व आंशिक प्रतिपूर्ति का सहारा

नई दिल्ली ।

पश्चिम एशिया में बढ़ते तनाव और सुरक्षा चिंताओं के कारण भारतीय निर्यातकों को बड़ी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। होर्मुज जलडमरूमध्य के आसपास जोखिम बढ़ने से जहाजों को लंबा मार्ग अपनाना पड़ रहा है, ट्रांसशिपमेंट हब पर भीड़ बढ़ी है और युद्ध-जोखिम बीमा शुल्क में भारी वृद्धि हुई है। इन परिस्थितियों में निर्यात लागत बढ़ने और शिपमेंट में अनिश्चितता पैदा होने लगी है। इन समस्याओं को देखते हुए केंद्र सरकार ने रिलीफ (रिसिलेंस एंड लो जि स्टिक्स इंटरवेंशन फार एक्सपोर्ट फे सिलेसन) योजना को मंजूरी दी है। इस योजना का उद्देश्य प्रभावित निर्यातकों को वित्तीय और जोखिम सुरक्षा प्रदान करना है। योजना के पहले घटक के तहत, जिन निर्यातकों ने पहले से ईसीजीसी बीमा कवर लिया हुआ है, उन्हें 14 फरवरी से 15 मार्च 2026 के बीच भेजे गए माल पर मौजूदा कवर के ऊपर 100 प्रतिशत अतिरिक्त जोखिम सुरक्षा मिलेगी। इससे पहले से बीमित शिपमेंट को पूर्ण सुरक्षा मिल सकेगी। दूसरे घटक में, 16 मार्च से 15 जून 2026 के बीच निर्यात की योजना बना रहे निर्यातकों को ईसीजीसी कवर लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा। इस अवधि में उन्हें मौजूदा कवर के ऊपर 95 प्रतिशत तक अतिरिक्त जोखिम सुरक्षा दी जाएगी, जिससे अनिश्चित परिस्थितियों में भी निर्यात जारी रह सके। तीसरे घटक के तहत, ऐसे एमएसएमई निर्यातकों को राहत दी जाएगी जिन्होंने बीमा नहीं लिया, लेकिन बढ़े हुए मालभाड़े और बीमा शुल्क का सामना किया। उन्हें 50 प्रतिशत तक लागत की प्रतिपूर्ति दी जाएगी, जिसकी सीमा प्रति निर्यातक 50 लाख रुपये तय की गई है। सरकार ने इस योजना के लिए 497 करोड़ रुपये का प्रावधान किया है और इसकी निगरानी के लिए एक डैशबोर्ड आधारित प्रणाली तथा अंतर-मंत्रालयी समूह का गठन किया गया है।

खुशहाली की दौड़ में भारत 116वें स्थान पर, रिपोर्ट ने चौंकाया

फिनलैंड सबसे खुशहाल देश, 14वीं वर्ल्ड हैप्पीनेस रिपोर्ट 2025

नई दिल्ली ।

गुरुवार को जारी 14वीं वर्ल्ड हैप्पीनेस रिपोर्ट में फिनलैंड लगातार नौवें साल दुनिया का सबसे खुशहाल देश घोषित हुआ, इसका स्कोर 7.764/10 रहा। इसके बाद आइसलैंड और डेनमार्क का स्थान रहा।

डेनमार्क को छोड़कर शीर्ष तीन देशों में खुशहाली स्कोर में वृद्धि हुई। भारत इस साल 147 देशों में 116वें स्थान पर रहा, औसत स्कोर 4.536। 2024 में भारत 118वें स्थान पर था। रिपोर्ट में दिखाया गया कि भारत ने छह संकेतकों में से चार में 1 अंक से भी कम स्कोर किया।

2019-2025 के बीच भारत का प्रति व्यक्ति जीडीपी बढी, लेकिन स्वस्थ जीवन प्रत्याशा और उदारता में गिरावट देखी गई। 2011-2025 के बीच भारत का कुल खुशहाली स्कोर 0.44 फीसदी घटा।

पड़ोसियों में चीन ने सबसे तेज

वृद्धि दर्ज की जबकि अफगानिस्तान में सबसे ज्यादा गिरावट हुई। रिपोर्ट यह स्पष्ट करती है कि केवल आर्थिक विकास देश की खुशहाली तय नहीं करता। सामाजिक समर्थन, स्वास्थ्य और पारदर्शिता भी लोगों की जीवन संतुष्टि में अहम भूमिका निभाते हैं।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

युशस्वी सहित इन तीन क्रिकेटरों पर रहेगी रॉयल्स की जिम्मेदारी

मुम्बई (एजेंसी)। आईपीएल में इस बार नये कप्तान रियान पराग के साथ उतर रही। राजस्थान रॉयल्स का लक्ष्य बेहतर प्रदर्शन करना रहेगा। रॉयल्स के पास उभरते क्रिकेटर युशस्वी जायसवाल, वैभव सूर्यवंशी और शिमोन हैटमायर हैं हालांकि उसे इस सत्र में अनुभवी बल्लेबाज संजू सैमसन की कमी खेलेगी। टीम का उम्मीद रहेगी की उसके युवा खिलाड़ जबरदस्मत प्रदर्शन कर उसे जीत दिलायें। पिछले कुछ सत्र में टीम ने युवाओं को अधिक से अधिक अवसर दिये हैं। जिस प्रकार से वैभव, यशस्वी और पराग सहित युवा खेल रहे हैं उससे रॉयल्स का सामना किसी भी टीम के लिए आसान नहीं होगा। ये खिलाड़ी शानदार फॉर्म में हैं और टीम की सफलता काफी हद तक इनके प्रदर्शन पर निर्भर करेगी। राजस्थान रॉयल्स की सबसे बड़ी ताकत उनकी संतुलित बल्लेबाज़ी है। टीम में शीर्ष क्रम से लेकर मध्य क्रम तक ऐसे खिलाड़ी हैं जो बड़े शॉट्स खेलने के साथ-साथ पारी को संभालने में कुशल हैं। टीम में देशी ओर विदेशी खिलाड़ियों का मिश्रण इसे ओर भी अधिक घातक बनाता है। टीम किसी भी प्रकार के हालातों में निडर होकर खेलने तैयार है। इसके बाद भी इन तीन खिलाड़ियों को निभानी होगी अहम भूमिका।

यशस्वी जायसवाल : यशस्वी जायसवाल इस सीज़न में टीक के सबसे अधिक रन बनाने वाले बल्लेबाज़ साबित हो सकते हैं। बाएं हाथ के इस युवा ओपनर ने पिछले सीज़न में शानदार प्रदर्शन करते हुए 14 पारियों में 559 रन बनाए थे। उनका स्ट्राइक रेट 159.71 रहा, जो उनकी आक्रामक बल्लेबाज़ी को दिखाता है। वह बड़ी पारी खेलने में माहिर होने के साथ ही एंकर की भूमिका भी निभाते हैं। सैमसन के टीम से जाने के बाद अब बल्लेबाज़ी की ज़िम्मेदारी काफी हद तक उनके पास रहेगी। ऐसे में टीम को अच्छी शुरुआत देने की जिम्मेदार उनपर रहेगी।

वैभव सूर्यवंशी: 14 साल के युवा बल्लेबाज़ वैभव सूर्यवंशी रॉयल्स के लिए सबसे बेहतरीन खिलाड़ियों में से एक हैं। पिछले सत्र में उन्होंने 206.56 के स्ट्राइक रेट से 252 रन बनाकर सबको प्रभावित किया था।उन्होंने सिर्फ 35 गेंदों में शतक लगाकर इतिहास रच दिया था और टीम20 क्रिकेट में सबसे कम उम्र में शतक बनाने वाले खिलाड़ी बने। इस दूसरे सत्र में भी उनका लक्ष्य अधिक से अधिक रन बनाना रहेगा। वैभव का कहना है कि उनकी नजरे क्रिस गेल के 175 रनों का रिकार्ड तोड़ना है।

शिमरॉन हेटमायर: वेस्टइंडीज़ के आक्रामक बल्लेबाज़ शिमरॉन हेटमायर रॉयल्स मध्यक्रम के आधार हैं। वह लंबे समय से टीम

का हिस्सा हैं और कई मौकों पर मैच विजेता पारियां खेल चुके हैं।हाल ही में टी20 वर्ल्ड कप 2026 में भी उनका प्रदर्शन शानदार रहा, जहां उन्होंने तेज़ स्ट्राइक रेट से रन बनाए। उनकी सबसे बड़ी ताकत दबाव में भी बड़े शॉट्स खेलने की क्षमता है। इस सत्र में टीम उनसे फिनिशर की भूमिका निभाने की उम्मीद करेगी।

थरूर को याद आई गंभीर की बात, सैमसन को अगला धोनी बनने की जरूरत नहीं

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईसीसी टी20 विश्व कप में अपने शानदार प्रदर्शन के बाद से ही बल्लेबाज संजू सैमसन छये हुए हैं। संजू की प्रशंसा करते हुए केरल से कांग्रेस सांसद शशि थरूर ने कहा है कि एक बार उनसे टीम के मुख्य कोच गौतम गंभीर ने कहा था कि उसे दूसरा महेंद्र सिंह धोनी बनने की जरूरत नहीं है क्योंकि वह अपने में ही खास है और उसे संजू सैमसन ही बने रहना चाहिये। थरूर ने कहा कि तब उन्होंने बातचीत के दौरान गंभीर से कहा था कि वह अगला धोनी बनेगा। वहीं अब थरूर ने गंभीर की इस बात को याद करते हुए विश्वकप में संजू की बल्लेबाजी के अंदाज को सराहा है। थरूर का कहना है कि वह क्लब क्रिकेटर के तौर पर करियर की शुरुआत से ही सैमसन को पसंद करते हैं। अब जबकि उसने इतनी उपलब्धियों को हासिल कर लिया है कि उन्हें उसपर गर्व होता है।

उन्होंने कहा, मैं उससे तब मिला था जब वह 14 साल का था, वह एक युवा क्लब क्रिकेटर था। वह देखने में भले ही कमजोर लगता था पर मन से काफी मजबूत था। उसमें जबरदस्त प्रतिभा थी। वह उस समय से ही विकेटकीपिंग और बल्लेबाजी दोनों कर रहा था। थरूर ने कहा, मैंने तब सैमसन से कहा था कि वह अगला धोनी बनेगा। इस बात को जब मैंने गंभीर से कहा, तो उन्होंने कहा कि नहीं, नहीं, उसे अगला धोनी बनने की जरूरत नहीं है, वह अपने में ही विशेष है, उसे सैमसन ही बने रहना होगा। और से बात सही साबित हुई है। थरुर ने कहा, जब मैं उसके साथ दुख-सुख में, कठिन समय में था तो मुझे ऐसा महसूस हुआ कि अगर वह अपने को संभाल ले तो सब कुछ वापस आ जाएगा। उसके अंदर प्रतिभा शुरु से थी। उन्होंने कहा, मुझे लगता है कि वेस्टइंडीज के खिलाफ मैच में जब उसने खेलना शुरू किया तो मैंने उसकी आंखों में गजब का आत्मविश्वास देखा था। उसी पल मुझ लगा कि वह आज आउट नहीं होने वाला। वह उस मैच में आउट ही नहीं हुआ और लगातार आगे बढ़ते रहा।

आईपीएल से बाहर हुए सैम करन, राजस्थान रॉयल्स की मुश्किलें बढ़ीं

जयपुर (एजेंसी)। राजस्थान रॉयल्स की टीम में शामिल इंग्लैंड के ऑलराउंडर सैम करन इस माह के अंत में शुरु हो रहे इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) सत्र से बाहर हो गये हैं। सैम के बाहर होने से रॉयल्स को करारा झटका लगा है। सैम के आने से माना जा रहा था कि रॉयल्स की गेंदबाजी और बल्लेबाजी मजबूत होगी पर ग्रोइन इंजरी के कारण वह भाग नहीं ले पायेंगे। ऐसे में रॉयल्स करन की जगह लेने के लिए कई विकल्पों पर विचार कर सकती है।

रॉयल्स ने संजू सैमसन के बदले चेन्नई सुपर किंग्स (सीएसके) से हुई ट्रेड डील में रविन्द्र जडेजा के साथ ही सैम को भी लिया था और अब ये फैसला उसके लिए नुकसानदायक साबित हो गया। सैम टी20 विश्व कप में भी इंग्लैंड टीम में शामिल थे।

सैम ने इससे पहले पंजाब किंग्स और सीएसके की ओर से खेला है। वह साल 2023 के इंडियन प्रीमियर लीग सत्र से पहले 18.5 करोड़ रुपए में बिके सबसे महंगे खिलाड़ी थे, उन्होंने साल 2020 और 2021 में चेन्नई सुपर किंग्स की ओर से था और गत सत्र से पहले 2.4 करोड़ रुपए में टीम में शामिल थे। उन्होंने 2025 में सीएके की ओर से पांच मैचों में 114 रन बनाने के साथ ही एक विकेट भी लिया था। वहीं भारतीय टीम के पूर्व तेज गेंदबाज लक्ष्मीपति बालाजी ने कहा था कि राजस्थान रॉयल्स को अनुभवी जडेजा या सैम में से किसी एक को कप्तान बनाना चाहिये था पर फ्रैंचाइजी ने युवा रियान पराग को कप्तान बनाया।

सहवाग की तरह आक्रामकता को संतुलित करें अभिषेक : कुंबले

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय टीम के दिग्गज स्पिनर अनिल कुंबले ने युवा सलामी बल्लेबाज अभिषेक शर्मा को सलाह दी है कि उन्हें लंबी पारी खेलने के लिए सही संतुलतन बनाना होगा। कुंबले के अनुसार अभिषेक को बल्लेबाजी के दौरान अपनी आक्रामकता पर नियंत्रण करना होगा ताकि वह जिम्मेदारी से अपनी भूमिक निभा सकें। इसके लिए उन्हें पूर्व सलामी बल्लेबाज वीरेंद्र सहवाग की बल्लेबाजी देखनी चाहिये। जिस प्रकार सहवाग ने अपने करियर के दौरान आक्रामकता को संतुलित कर लंबी पारियां खेली हैं। वैसा ही अभिषेक भी कर सकता हैं। अभी वह अधिकतर अधिक जोखिम उठाकर रन टीम को तेज शानदार शुरुआत दिलाते हैं पर बड़ी पारी नहीं खेल पाते।

कुंबले ने कहा, मैं उनकी तुलना सहवाग जैसे खिलाड़ी से करूंगा क्योंकि वह भी हर गेंद को स्मैश करने की कोशिश करते थे। जब वह टेस्ट क्रिकेट से एकदिवसीय क्रिकेट और फिर टी20

में आए तो उन्हें अहसास हुआ कि उन्हें अपनी पारी की गति थोड़ी अलग तरह से तय करनी होगी। हालांकि सहवाग तब भी 140-150 के स्ट्राइक रेट से खेलते थे। अभिषेक को भी इसी प्रकार की नीति अपनानी होगी। उन्हें अपने से पूछना चाहिए, मैं 200 के स्ट्राइक रेट से रन बना रहा हूं, मुझसे उम्मीदें लगी हुई हैं, तो क्या अब मुझे 300 के स्ट्राइक रेट से खेलना चाहिए या नहीं? आपको बस सामान्य रहना है। आपको ज्यादा से ज्यादा गेंदें खेलनी हैं। उन्होंने कहा, अगर वह किसी पारी में 20 गेंदें खेलते हैं तो करीब 50 रन तक पहुंच जाएंगे। हमने संजू सैमसन के साथ भी ऐसा ही देखा है, वह 40 या 50 के स्कोर पर आउट नहीं होते बल्कि पारी को और आगे ले जाकर 85-90 के स्कोर तक पहुंचते हैं और अपनी पारी को यादगार बनाते हैं। कुंबले ने कहा, टी20 प्रारूप में आपको इसी तरह की ही बल्लेबाजी की जरूरत होती है। हो सकता है अभिषेक इस सत्र में सनराइजर्स हैदराबाद की ओर से खेलते हुए बदलाव लाये।

गौरतलब है कि अभिषेक टी20 विश्व कप में अधिक सफल नहीं रहे और केवल दो बार ही 50 रनों से अधिक बना पाये। अब वह 28 मार्च से शुरू हो रहे आईपीएल में सनराइजर्स हैदराबाद की तरफ से खेलते नजर आएंगे। दक्षिण अफ्रीका के पूर्व कप्तान एबी डिविलियर्स ने भी कहा कि उन्हें अपनी निरंतरता पर काम करने की जरुरत है। इसका कारण है कि उनसे टीम को काफी उम्मीदें रहेंगी। उन्होंने कहा, वह अब 25 साल का है, 20 का नहीं। इसलिए यह निश्चित रूप से वह दौर है जब उसे ज्यादा जिम्मेदारी लेनी शुरू कर देनी चाहिए। मीडिया का दबाव होगा और लोग उससे और अधिक अच्छा प्रदर्शन करने की उम्मीद करेंगे। डिविलियर्स ने कहा, हम जानते हैं कि टी20 विश्व कप के दौरान उसका प्रदर्शन थोड़ा ऊपर-नीचे रहा था, जो निराशाजनक था। फाइनल में उसने अच्छा प्रदर्शन किया। लेकिन इसके अलावा उसके लिए यह टूर्नामेंट इतना अच्छा नहीं रहा।

आयरलैंड के स्टर्लिंग ने टी20 कप्तानी छोड़ी, एकदिवसीय में बने रहेंगे

डबलिन (ईएमएस)। आयरलैंड के सलामी बल्लेबाज पॉल स्टर्लिंग ने टी20 विश्वकप की कप्तानी से इस्तीफा दे दिया है हालांकि वह एकदिवसीय प्रारुप में कप्तान बने रहेंगे। स्टर्लिंग ने कहा कि उनका लक्ष्य 2027 में होने वाले एकदिवसीय विश्वकप के लिए टीम में अपनी जगह पक्की रना रहेगा। इसी लिए वह टी20 प्रारुप की कप्तानी छोड़ रहे हैं। स्टर्लिंग ने कहा, इस प्रारुप में आयरलैंड की कप्तानी करना मेरे लिए सम्मान की बात रही है और मुझे ऐसा करने पर बेहद खुशी का अनुभव हो रहा है। अपने देश की कप्तानी करना सम्मान की बात है जिसके साथ आप पर जिम्मेदारी भी आती है। कप्तानी करते हुए मुझे जो विश्वास और समर्थन मिला, उसके लिए मैं बहुत आभारी हूं। उन्होंने कहा, हालांकि मैं टी-20 कप्तानी छोड़ रहा हूं, फिर भी मैं आयरलैंड टीम के प्रति पूरी तरह समर्पित हूं और एकदिवसीय कप्तान के तौर पर अपनी जिम्मेदारी निभाता रहूंगा। एक खिलाड़ी के तौर पर मुझमें अभी भी बहुत अधिक जुनून है और मुझे लगता है कि टी20 प्रारुप की कप्तानी छोड़ने के बाद मैं और बेहतर तरीके से एकदिवसीय प्रारुप पर ध्यान दे सकूंगा। स्टर्लिंग ने 48 टी-20 मैचों में आयरलैंड की कप्तानी की है जिसमें से 20 मैच वह जीते और 26 हारे हैं। वहीं दो मैचों का कोई परिणाम नहीं आया। उन्हें साल 2023 में एंडी बालबर्नी के कप्तानी छोड़ने के बाद कप्तान बनाया गया था।

सनराइजर्स हैदराबाद के ऑलराउंडर एडवर्ड्स चोटिल होने के कारण आईपीएल से बाहर हुए

नई दिल्ली। सनराइजर्स हैदराबाद की टीम में शामिल ऑस्ट्रेलियाई ऑलराउंडर जैक एडवर्ड्स चोटिल होने के कारण इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के 19 वें सत्र से बाहर हो गये है। एडवर्ड्स को सनराइजर्स ने नीलामी में 3 करोड़ रुपए में खरीदा था। इस ऑलराउंडर ने अब तक अपने करियर में ऑस्ट्रेलिया की ओर से केवल एक मैच खेला है जिसमें उन्होंने पांच रन बनाए हैं। इस खिलाड़ी ने 77 टी20 मैचों में 57 पारियां खेलते हुए 853 रन बनाने के साथ ही 52 विकेट भी लिए हैं। एडवर्ड्स का प्रदर्शन बिग बैश लीग (बीबीएल) में काफी अच्छा रहा था। उन्होंने सिडनी सिक्सर्स के लिए 13 मैचों में 19 विकेट लिए और 133 रन बनाए। एडवर्ड्स के बाहर होने के बाद अब उनकी जगह टीम किसे रखती है ये देखना होगा। टीम के नियमित कप्तान ऑस्ट्रेलिया के पैट कमिंस भी अब तक फिट नहीं होने के कारण शुरुआती सत्र से बाहर हैं, ऐसे में एडवर्ड्स का बाहर होना उसके लिए दूसरा झटका है। इसी कारण शुरुआती मैचों में ईशान किशन टीम की कप्तानी करेंगे। सनराइजर्स हैदराबाद का पहला मुकाबला 28 मार्च को रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) से होगा।

केकेआर का कोच अभिषेक ने हौंसला बढ़ाया, चौथी बार खिताब जीतने उतरे टीम

कोलकाता। कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) के मुख्य कोच अभिषेक नायर ने यहां अभ्यास सत्र में टीम का हौंसला बढ़ाते हुए कहा कि उसे इस बार खिताब जीतने के इरादे से उतरना चाहिये। नायर ने कहा कि टीम के पास चौथी बार इस खिताब को जीतने के लिए सभी

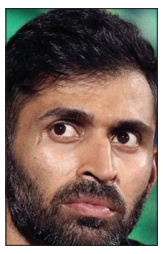

जरुरी कौशल हैं। टीम के पास अच्छे बल्लेबाज और गेंदबाज है केवल उसे एकजुट होकर खेलना है। तीन बार की आईपीएल विजेता केकेआर अपने अभियान की शुरुआत 29 मार्च को मुंबई के वानखेड़े स्टेडियम में पांच बार की चैंपियन मुंबई इंडियंस के खिलाफ मुकाबले से करेगी। केकेआर के एक वीडियो में नायर ने कहा, 'हमने काफी तैयारी की है जिसे अब अमल में लाने का समय आ गया है पिछले कुछ महीनों में हमने अपने कौशल को निखारा है। हमने पर पक्ष को लेकर बात की है। अब हमें केवल इस बात का ध्यान रखना है कि हम किस प्रकार से मानसिक रुप से तैयार होते हैं। हमें मैदान पर बिताया हर पल, का लाभ उठाना होगा।' उन्होंने कहा, 'हमें बस एक काम करना है कि जीत का लक्ष्य लेकर उतरना है। हमें वह चौथा खिताब हासिल करना है जिसके लिए हमें तैयार रहना होगा। हम हर चीज के लिए तैयार।' नायर ने इस अवसर पर यहायक कोच शेन वॉटसन और फील्डिंग कोच दिशंत यान्गिक का भी टीम में स्वागत किया। ये दोनो ही इस सत्र में सहयोगी स्टाफ का हिस्सा बने हैं। साथ ही कहा कि हर कोई शेन वॉटसन को एक खिलाड़ी के तौर पर जानता है पर मैं उन्हें एक ऐसे इंसान के तौर पर जानता हूं, जिसने उनके नेतृत्व में एक खिलाड़ी के तौर पर खेला है। केकेआर ने साल 2024 में श्रेयस अय्यर की कप्तानी में खिताब जीता था पर साल 2025 में आजिंक्य रहाणे की कप्तानी में टीम असफल रही थी। इस बार भी हालांकि रहाणे ही कप्तान रहेंगे।

भारत की अंडर 20 महिला टीम एशियाई कप खेलने थाईलैंड पहुंची, दो दशक बाद किया क्वालीफाई

बैंकॉक (एजेंसी)। भारत की 24 सदस्यीय अंडर 20 महिला फुटबॉल टीम थाईलैंड में अगले महीने होने वाले एएफसी अंडर 20 महिला एशियाई कप से पहले पंद्रह दिन के अनुकूलन शिविर में भाग लेने शुक्रवार को यहां पहुंच गई।

भारतीय टीम ने दो दशक बाद इस टूर्नामेंट के लिए क्वालीफाई किया है। यह टीम दो अप्रैल को जापान के खिलाफ ग्रुप सी के पहले मुकाबले से पूर्व13 दिन अनुकूलन शिविर में भाग लेगी। भारत को पांच अप्रैल को आस्ट्रेलिया से और आठ अप्रैल को चीनी ताइपै से खेलना है। ग्रुप की शीर्ष दो टीमें और तीसरे स्थान की दो सर्वश्रेष्ठ टीमें क्वार्टर फाइनल खेलेंगी। क्वार्टर फाइनल जीतने वाली टीमें पोलैंड में इस साल होने वाले फीफा अंडर 20 विश्व कप में जगह बनाएंगी।

भारतीय टीम ने इंडियन वुमैंस लीग के पहले चरण के बाद बेंगलुरू में स्वीडिश कोच जोकिम अलेक्जेंडरसन के मार्गदर्शन में अभ्यास किया है। इसके अलावा स्वीडन में एक महीने का अभ्यास शिविर भी लगा था। भारत ने स्वीडन की सीनियर टीम के खिलाफ पांच दोस्ताना मैच भी खेले। यूरोप से आने के बाद टीम ने कोलकाता में अभ्यास शिविर में भी भाग लिया।

भारतीय टीम

गोलकीपर : मोनालिसा देवी एम, नंदिनी, रिबांसी जामू

डिफेंडर : अलका इंदवार, सिंडी आर कोलनी, निशिमा कुमारी, रेमी थोकचोम, रूचि यादव, सहीना टीएच, शुभांगी सिंह, टी चानू तोइजाम

मिडफील्डर : अंजू चानू कायेनपेइबाम, अरिना देवी एन, भूमिका देवी, मोनिशा सिंघा, नेहा, पूजा, श्रुति कुमारी

फॉरवर्ड : बबीता कुमारी, दीपिका पाल, लिंगदेइकिम, शिलजी शाजी, सिबानी देवी एन, सुलांजना राउल

कजाकिस्तान की मेजबानी कर रहा है हॉकी इंडिया

नई दिल्ली। हॉकी इंडिया ने कजाकिस्तान की सीनियर पुरुष हॉकी टीम का गर्मजोशी से स्वागत किया। यह टीम अभी भारत में है और 10 से 21 मार्च, 2026 तक हरियाणा के सोनीपत में भारतीय खेल प्राधिकरण (स्ड्ढ) के उत्तरी क्षेत्रीय केंद्र में एक हाई-परफॉर्मेंस ट्रेनिंग कैंप में हिस्सा ले रही है। यह कैंप आने वाले एशियन गेम्स क्वालिफायर्स 2026 की तैयारियों का हिस्सा है। भारत के सबसे बेहतरीन हॉकी ट्रेनिंग केंद्रों में से एक में आयोजित यह कैंप, विश्व-स्तरीय सिंथेटिक टर्फ, आधुनिक कंडीशनिंग सुविधाएँ और एक बेहद प्रतिस्पर्धी माहौल प्रदान करता है। यह कजाकिस्तान को एक अहम कॉन्टिनेंटल मुकाबले से पहले अपनी तैयारियों को और बेहतर बनाने के लिए एक आदर्श मंच देता है। यह पहल भारत सरकार, युवा मामले और खेल मंत्रालय और भारतीय खेल प्राधिकरण के उस विजन के अनुरूप है, जिसके तहत अंतरराष्ट्रीय टीमों की मेजबानी और उन्हें सहयोग देकर देश को खेल उत्कृष्टता के एक वैश्विक केंद्र के रूप में स्थापित किया जा सके। यह ओलंपिक आंदोलन के सिद्धांतों को भी दर्शाता है, जो सीमाओं के पार सहयोग और एथलीटों के विकास को बढ़ावा देता है। भारत में अभ्यास करने के बारे में बात करते हुए, कज़ाकिस्तान की कोच ओल्गा उरमानोवा ने कहा, ''हमें भारतीय खेल प्राधिकरण के उत्तरी क्षेत्रीय केंद्र, सोनीपत में आकर बहुत खुशी हुई है। यहां हमारी टीम का बहुत ही मेहमाननवाज तरीके से स्वागत किया गया है। कुल मिलाकर, भारत में हॉकी का स्तर बहुत ऊँचा है, और यही वजह है कि हमने यहां आने का फैसला किया-ताकि हम सीख सकें, यहाँ के माहौल में ढल सकें और आगे बढ़ सकें। हीरो एशिया कप 2025 के दौरान बिहार के राजगीर में खेलने के बाद, यह हमारी भारत की दूसरी यात्रा है, और एक बार फिर, हमारा अनुभव अमूल्य रहा है।'

अभ्यास मैच में शमी, आवेश ने खोले हाथ, ऋषभ का आक्रामक अंदाज

लखनऊ (एजेंसी)। लखनऊ सुपर जायंट्स (एलएसजी) की टीम ने गुरुवार को यूपी 20 लीग की टीम काशी रुद्रा के साथ अभ्यास मैच में अपने हाथ खोले।स्पोर्ट्स गैलेक्सी क्रिकेट अकादमी के मैदान पर एलएसजी बनाम के आर इलेवन अभ्यास मैच खेला गया जिसमें तेज गेंदबाज मो. शमी, मोहसिन खान, आवेश खान और बल्लेबाज मुकुल चौधरी काशी रुद्रा के खिलाड़ियों के साथ खेले। जबकि कप्तान ऋषभ पंत दोनों टीमों से बैटिंग करने उतरे। पहले बल्लेबाजी करने आई एलएसजी की टीम से ऋषभ पंत, अर्शीन कुलकर्णी और शहबाज अहमद ने आक्रामक पारी खेली। केआर इलेवन की ओर से मो. शमी,

आवेश खान और मोहसिन ने अपनी स्विंग और बाउंसर से चकित किया। लखनऊ सुपर जायंट्स के कप्तान ऋषभ पंत व मुकुल चौधरी और काशी रुद्रा के शुभम व अभिषेक ने ताबड़तोड़ बल्लेबाजी की और मैदान के चारों ओर शॉट लगाकर दर्शकों को रोमांचित कर दिया। एलएसजी की ओर से मयंक यादव, दिग्वेश राठी, शहबाज, अर्जुन ने बेहतरीन गेंदबाजी की। एलएसजी के खिलाड़ियों को खेलते देख अकादमी के नन्हें क्रिकेटर भी चीयर करने पहुंचे। कुछ खिलाड़ियों ने बच्चों को आटोग्राफ भी दिए और फोटोज खिंचवाई। टीम प्रबंधन के मुताबिक लखनऊ सुपर जायंट्स के सभी भारतीय खिलाड़ी पहले ही टीम से जुड़ चुके हैं, शुक्रवार से ओवरसीज खिलाड़ियों का आना भी शुरू हो जाएगा। इसके बाद अभ्यास में और तेजी आएगी।

रोहित, धोनी सहित ये खिलाड़ी एक बार भी नहीं हासिल कर पाये ऑरेंज कैप

मुम्बई (एजेंसी)। आईपीएल का 19 वां सत्र इस माह के अंत में शुरु होने जा रहा है। जिसमें दस टीमो के बीच खिताब मुकाबला होगा। इस दौरान सबसे अधिक रनों के लिए बल्लबाज को ऑरेंज कैप दी जाती है। रोहित शर्मा,महेन्द्र सिंह धोनी सहित कई बल्लेबाज ऐसे भी रहे हैं जो टूर्नामेंट में सबसे ज्यादा रन बनाने के बाद भी कभी ऑरेंज कैप नहीं जीत पाए। इसका कारण ये ही है कि ये बल्लेबाज एक सत्र में रनों के मामले में नंबर एक पर नहीं रहे।

रोहित शर्मा

रोहित शर्मा की कप्तानी में मुंबई इंडियंस ने पांच बार खिताब जीता है। वह आईपीएल इतिहास में विराट कोहली 8661 के बाद सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाज हैं इसके बाद भी उन्हें आज तक ऑरेंज कैप नहीं मिली है। उन्होंने अपने आईपीएल करियर में 272 मैच खेलकर 7046 रन बनाए हैं, मगर फिर भी कभी ऑरेंज कैप नहीं जीती। रोहित का लक्ष्य इस बार अधिक से अधिक रन बनाकर ये खिताब जीतना रहेगा।

महेन्द्र सिंह धोनी

चेन्नई सुपर किंग्स (सीएसके) को पांच बार खिताब जिताने वाले पूर्व कप्तान महेन्द्र सिंह धोनी ने भी आईपीएल में 5439 रन बनाये हैं। उन्होंने कई मौकों पर सीएसके को हारी हुई बाजी जिताई है, मगर वह कभी भी ऑरेंज कैप नहीं जीत पाए है।

सुरेश रैना

चेन्नई सुपर किंग्स के बल्लेबाज सुरेश रैना ने भी भी अपने आईपीएल करियर में 200 से अधिक मैच खेले, मगर कभी एक सत्र में सबसे ज्यादा रन बनाकर ऑरेंज कैप नहीं जीत पाए। रैना ने 205 आईपीएल मैचों मं 5528 रन बनाए मगर कभी ऑरेंज कैप नहीं जीत पाए।

शिखर धवन

शिखर धवन ने भी आईपीएल में काफी रन बनाये है मगर कभी वह ऑरेंज कैप नहीं जीत पाए। शिखर धवन ने अपने आईपीएल करियर में मुंबई, दिल्ली, हैदराबाद और पंजाब जैसी टीमों के लिए खेला। वह 2016 में सनराइजर्स हैदराबाद में रहते हुए ट्रॉफी उठाने में भी सफल रहे। धवन ने 222 आईपीएल मैच खेलकर 6769 रन बनाए मगर एक सत्र में नंबर एक न होने के काण ऑरेंज कैप नहीं जीत पाए।

एबी डी विलियर्स

दिल्ली कैपिटल्स (दिल्ली डेयरडेविल्स पुराना नाम) से आईपीएल में डेब्यू करने वाले एबी डी विलियर्स डी वीलियर्स पहले तीन साल दिल्ली के लिए खेलने के बाद रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु से खेलने लगे। इस लीग में 14 सत्र खेलकर डी विलियर्स ने 5000 से अधिक रन बनाये पर कभी ऑरेंज कैप

नहीं जीत पाए। एबी डी विलियर्स ने रन बनाए थे। अपने आईपीएल करियर में कुल 5162

भारत 2028 विश्व एथलेटिक्स इंडोर चैंपियनशिप की करेगा मेजबानी

नयी दिल्ली। भारत 2028 विश्व इंडोर एथलेटिक्स चैंपियनशिप की मेजबानी करेगा। ये खेल ओडिशा की राजधानी भुवनेश्वर में आयोजित किये जाये। भारत की मेजबानी वाली बोली को विश्व एथलेटिक्स परिषद की गुरुवार को पोलैंड के टोरून में हुई बैठक में मंजूरी दी। इससे पहले जनवरी में वर्ल्ड एथलेटिक्स की टीम ने भुवनेश्वर के कलिंगा स्टेडियम कॉम्प्लेक्स के इंडोर स्टेडियम का निरीक्षण किया था। भारतीय एथलेटिक्स महासंघ (एएफआई) ने जनवरी 2026 में इस चैंपियनशिप के लिए अपनी बोली पेश की थी। इसके तुरंत बाद, उसी महीने वैश्विक एथलेटिक्स संस्था की दो-सदस्यीय टीम ने भुवनेश्वर के कलिंगा स्टेडियम परिसर में स्थित इंडोर सुविधा का दौरा किया था। केन्द्रीय खेल मंत्री डॉ. मनसुख मांडविया ने इस घटनाक्रम पर अपनी खुशी व्यक्त करते हुए सोशल मीडिया मंच एक्स पर लिखा, 'यह जानकर बहुत खुशी हुई कि ओडिशा का भुवनेश्वर 2028 विश्व एथलेटिक्स इंडोर चैंपियनशिप की मेजबानी करेगा।' भारत इस चैंपियनशिप की मेज़बानी करने वाला चौथा एशियाई देश बन जाएगा। जापान (1999), कतर (2010) और चीन (2025) अन्य एशियाई देश हैं जिन्होंने इस प्रतियोगिता की मेजबानी की है।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

ग्रीष्मकालीन उड़द की खेती

गर्मी का मौसम आ गया है। खेतों में नई फसल बोने का समय आ गया है। ऐसे में आज हम एक ऐसी दलहनी फसल की खेती के बारे में बताएंगे जिसकी बाजार में पूरे साल मांग रहती है। उड़द की खेती दलहनी फसलों की श्रेणी में गिनी जाती है। कम समय में अधिक मुनाफा कमाने के लिए विशेषज्ञ उड़द की खेती करने की सलाह देते हैं। यह 60 से 65 दिन में तैयार होने वाली फसल है। इसके अलावा इसके पोषक तत्वों के कारण बाजार में भी इसकी अच्छी मांग है।

दलहनी फसलों में उड़द एक प्रमुख फसल मानी जाती है। इसकी खेती के लिए गर्मी का मौसम सही समय है क्योंकि इस समय तापमान में नमी कम होती है। उड़द की खेती के लिए गर्मी का मौसम सबसे उपयुक्त माना जाता है. इसकी बुआई अप्रैल के पहले सप्ताह में शुरू कर देनी चाहिए क्योंकि इसकी वृद्धि के लिए 30 से 40 डिग्री का तापमान उपयुक्त होता है.

उड़द की बुवाई गर्मी के मौसम में करने की सलाह दी जाती है। इसे फरवरी के अंतिम सप्ताह और मार्च के पहले सप्ताह में वसंत और गर्मियों में और खरीफ मौसम में जून और जुलाई के महीने में बोया जाना चाहिए। इसके लिए 25 से 35 डिग्री का तापमान अच्छा होता है। इसकी खेती के लिए अधिक पानी की आवश्यकता होती है, उड़द की खेती लगभग 700 से 900 मिमी वर्षा वाले क्षेत्रों में की जाती है। पौधों को कम से कम 10 सेमी की दूरी पर बोना चाहिए और बीज भी लगभग 4 से 6 सेमी की गहराई पर बोया जाना चाहिए। इन फफूंदनाशक से हम उड़द बीच का उपचार कर सकते हैं, हमें फफूंदनाशक जैसे केप्टन या थायरम आदि का प्रयोग करना चाहिए। साथ ही राइजोबियस कल्चर द्वारा इस उपचार के बाद किसान अपनी फसल का 15% उपज बढ़ा सकते हैं।

उड़द की उन्नत किस्मे

वैसे तो बाजार में कई प्रकार की उन्नत किस्म हमें मिलती है जिन्हे अलग-अलग जलवायु के हिसाब से अधिक उत्पादन के लिए पूरे भारत में उगाया जाता है, आइये जानते है उड़द की प्रमुख किस्में :

टी. 19
पंत यु 19
कृष्णा
पंत यु 19
जे.वाई.पी.
आर.बी.यू. 38
यु.जी. 218
एल बी जी- 20
के यू- 309
ए डी टी- 4
ए डी टी- 5
जवाहर उड़द 2
आजाद उड़द- 1
वांबन- 1,

कीटों और बीमारियों से बचाएं

उड़द की फसल में कीट एवं रोग लगने का खतरा रहता है। ऐसे में समय रहते इसका प्रबंधन कर किसान अपनी फसलों को नुकसान से बचा सकते हैं. फसलों में लगने वाले रोगों की पहचान करें, फिर उसके अनुसार उपरोक्त कीटनाशकों का छिड़काव करें। अलग-अलग बीमारियों के लिए अलग-अलग दवाओं का छिड़काव किया जाता है। ऐसे में इसके लिए किसी फसल डॉक्टर से संपर्क करें।

खाद एवं उर्वरक का उपयोग

ग्रीष्मकालीन खेती के लिए खेत तैयार करते समय उर्वरकों के उपयोग की बात करें तो यदि संभव हो तो गोबर की खाद का उपयोग किया जा सकता है। इसके लिए आप प्रति एकड़ डेढ़ से दो ट्रॉली गोबर की खाद दे सकते हैं, जो कार्बन से भरपूर होती है। जड़ों के विकास के लिए गाय का गोबर बहुत ही महत्वपूर्ण उर्वरक है।

रासायनिक उर्वरकों की बात करें तो 100 किलोग्राम एसएसपी (सिंगल सुपर फॉस्फेट) दिया जा सकता है, जिसमें सल्फर होता है। इसके अलावा इसमें कई पोषक तत्व भी पाए जाते हैं। उड़द एक दलहनी फसल है जिसमें सल्फर की भी आवश्यकता होती है। इसके साथ ही 20 किलो पोटाश उर्वरक ले सकते हैं. इन उर्वरकों को खेत की तैयारी के समय छिड़का जा सकता है और रोटावेटर या कुदाल से खेत को समतल किया जा सकता है।

उत्पादन की बात करें तो अगर आप समय पर ध्यान दें और सही तरीके से उड़द की खेती करें तो उत्पादन 4 से 6 क्विंटल प्रति एकड़ होगा। यानी एक बीघे में आपको 2 से 3 या फिर चार क्विंटल तक की पैदावार मिल सकती है।

पृथ्वी पर उगने वाला सबसे पुराना पेड़ है खजूर

खजूर पृथ्वी पर उगने वाला सबसे पुराना पेड़ है। वे कैल्शियम, चीनी, लोहा और पोटेशियम का उत्कृष्ट स्रोत हैं। उनका उपयोग कई सामाजिक और धार्मिक त्योहारों में किया जाता है। इसके अलावा उनके कई स्वास्थ्य लाभ हैं, जैसे कि कब्ज, हृदय रोग को कम करना, दस्त को नियंत्रित करना और गर्भावस्था में मदद करना। इसका उपयोग विभिन्न उत्पादों जैसे चटनी, अचार, जैम, जूस और अन्य बेकरी आइटम बनाने के लिए भी किया जाता है।

फसल की किस्म

मेडजूल : देर से परिपक्व होने वाली किस्म, फल आकार

से 75-100 किग्रा की औसत उपज प्राप्त की जाती है।

खूनेझी : प्रारंभिक परिपक्व किस्म। फल लम्बी आकृति वाले लाल रंग के होते हैं। यह उच्च आर्द्रता स्तर में सामना कर सकता है। प्रति पेड़ 40 किलोग्राम की औसत उपज प्राप्त की जाती है।

खलस : फल लम्बी आकृति के और मध्यम आकार के होते हैं। फल पीले भूरे रंग के होते हैं। फलों की मिठास मध्यम है, न बहुत कम और न ही बहुत अधिक।

बुवाई का समय

बुवाई फरवरी से मार्च महीने में और अगस्त से सितंबर महीने में की जाती है।

दुरी

रोपाई के लिए 6 मीटर या 8 मीटर के फासले पर 1 मीटर × 1 मीटर × 1 मीटर आकार के गड्ढे खोदें।

बीज की गहराई

रोपाई के लिए 1 मीटर × 1 मीटर × 1 मीटर आकार के गड्ढे खोदें।

बुवाई का ढंग

मुख्य खेत में वानस्पतिक भाग की रोपाई की जाती है।

बीज की मात्रा

जब 6 मीटर की दूरी पर रोपने के लिए पंक्ति और पौधे का उपयोग किया जाता है, तो एक एकड़ में लगभग 112 अंकुर होते हैं। 8 मीटर के लिए 8 मीटर की दूरी पर 63 अंकुर प्रति एकड़ के हिसाब से होते हैं।

बीज का उपचार

जड़ों को प्रोत्साहित करने के लिए, गड्ढे में रोपाई से पहले, आईबीए - 1000 पीपीएम और क्लोरपाइरीफोस - 5 मिली प्रति लीटर पानी में दो से पांच मिनट के लिए चूसक के बेस को डुबो दें।

खाद एवं रासायनिक उर्वरक

सितंबर से अक्टूबर महीने में, युवा पौधों के लिए खाद - 10-15 किलोग्राम और परिपक्व पौधे के लिए 30-40 किलोग्राम प्रति पेड़ का जरुरत होती है। परिपक्व वृक्ष पर एक वर्ष के पौधे पर यूरिया-4.4 किग्रा लगाया जाता है। यूरिया का अनुप्रयोग दो समान विभाजन में किया जाता है, पहली खुराक फूल देने से पहले दी जाती है और शेष आधी खुराक अप्रैल में फल सेट होने के बाद दी जाती है।

खजूर पृथ्वी पर उगने वाला सबसे पुराना पेड़ है। वे कैल्शियम, चीनी, लोहा और पोटेशियम का उत्कृष्ट स्रोत हैं। उनका उपयोग कई सामाजिक और धार्मिक त्योहारों में किया जाता है। इसके अलावा उनके कई स्वास्थ्य लाभ हैं, जैसे कि कब्ज, हृदय रोग को कम करना, दस्त को नियंत्रित करना और गर्भावस्था में मदद करना। इसका उपयोग विभिन्न उत्पादों जैसे चटनी, अचार, जैम, जूस और अन्य बेकरी आइटम बनाने के लिए भी किया जाता है।

खरपतवार नियंत्रण

खेत में खरपतवार नियंत्रण हेतु निराई गुड़ाई करें और खेत को साफ़ रखे।

सिंचाई

ग्रीष्मकाल में, सिंचाई 10-15 दिनों के अंतराल पर और सर्दियों में सिंचाई 30-40 दिनों के अंतराल पर दी जाती है। पौधों को घिरने के बाद पूर्व सिंचाई आवश्यक है। फलों के सेट के बाद सिंचाई नियमित अंतराल पर दी जाती है।

फसल की अवधि

खजूर के पौधे को फल लगने से पहले 4 से 8 साल लग सकते हैं, और 7 से 10 साल के बीच व्यावसायिक फसल के लिए व्यवहार्य पैदावार देने लगेंगे।

कटाई का समय

रोपण के चार से पांच साल बाद, खजूर का पेड़ पहली फसल के लिए तैयार होता है। फलों की कटाई तीन चरणों में की जाती है, खल या डोका चरण (ताजे फल), नरम या पकने की अवस्था (पिंड) और शुष्क अवस्था (चौहारा)। मानसून के मौसम की शुरुआत से पहले फलों की कटाई पूरी करें।

उत्पादन क्षमता

खजूर के पौधे को फल लगने से पहले 4 से 8 साल लग सकते हैं, और फल और 7 से 10 साल के बीच व्यावसायिक फसल के लिए व्यवहार्य पैदावार देना शुरू कर देंगे।

सफाई और सुखाने

डोका चरण में कटाई के बाद, फलों को साफ पानी से धोएं। चूहड़ा बनाने के उद्देश्य के लिए, उन्हें 80 से 120 घंटों के लिए 40-45 डिग्री सेल्सियस के तापमान पर धूप में या ड्रायर में सुखाया जाता है।

कुछ फसलें जो आपको गर्मियों में अच्छा मुनाफा दिला सकती हैं!

गर्मी का मौसम किसानों और बागवानों दोनों के लिए बहुत सारे अवसर लेकर आता है। लंबे दिन, भरपूर धूप और गर्म मौसम कई पौधों को अच्छी तरह से बढ़ने में मदद करते हैं। चाहे आप एक व्यावसायिक किसान हों जो अपनी आय बढ़ाना चाहते हैं या एक घरेलू माली जो अच्छी फसल की उम्मीद कर रहे हैं, सही फसल चुनना महत्वपूर्ण है। इस ब्लॉग में, आइए गर्मियों में उगाई जाने वाली कुछ बेहतरीन फसलों पर नज़र डालें और सफलता के लिए सुझाव साझा करें।

गर्मियों में लाभदायक फसल के लिए इन फसलों पर विचार करें :

टमाटर -

टमाटर गर्मियों की एक लोकप्रिय फसल है जो अच्छा मुनाफा ला सकती है। इनका उपयोग सलाद से लेकर सॉस तक कई व्यंजनों में किया जाता है और इनकी हमेशा मांग रहती है। चेरी, बीफ़स्टीक और हीरलूम टमाटर जैसी किस्में हमेशा ग्राहकों द्वारा पसंद की जाती हैं। उन्हें अच्छी जल निकासी वाली मिट्टी, भरपूर धूप और नियमित पानी की आवश्यकता होती है। सही देखभाल के साथ, वे निवेश पर बढ़िया रिटर्न दे सकते हैं।

खीरे - खीरे गर्मियों की एक तेज़ी से बढ़ने वाली फसल है जो अच्छी उपज देती है। वे सलाद, अचार और यहां तक ??कि सौंदर्य उत्पादों के लिए भी बहुत अच्छे हैं। खीरे गर्म मौसम में पनपते हैं और कड़वाहट से बचने के लिए उन्हें लगातार पानी देने की ज़रूरत होती है। ऊर्ध्वाधर और क्षैतिज ढांचे का उपयोग करने से जगह बचाने और हवा के प्रवाह को बेहतर बनाने में मदद मिल सकती है, जिससे बीमारी की संभावना कम हो जाती है।

शिमला मिर्च

शिमला मिर्च रंग-बिरंगी, पौष्टिक होती है और बहुत लाभदायक हो सकती है। ये हरे, लाल, पीले और नारंगी जैसे कई रंगों में आती हैं, जो अलग-अलग बाजारों को आकर्षित करती हैं। इन्हें गर्म मौसम और अच्छी जल निकासी वाली मिट्टी पसंद होती है। इनकी देखभाल करना आसान है और ये स्थानीय और व्यावसायिक दोनों ही बाजारों में अच्छी तरह बिक सकती हैं। शिमला मिर्च महंगी सब्जियों में से एक है जिसकी हमेशा मांग रहती है।

तोरी और समर स्क्वैश

तोरी और समर स्क्वैश जल्दी उगते हैं और कम समय में बहुत ज़्यादा उपज देते हैं। इन्हें पकाने में आसानी होती है और इन्हें कई व्यंजनों में मिलाया जा सकता है। इन पौधों को बहुत ज़्यादा धूप और लगातार पानी की ज़रूरत होती है। इन्हें कम उम्र में ही तोड़ लेने से इनका स्वाद और बनावट सबसे बढ़िया होती है। तोरी अपने पोषण मूल्य के कारण बहुत ज़्यादा महत्व प्राप्त कर रही है।

तरबूज

एक पका हुआ तरबूज़ गर्मियों का सच्चा प्रतीक है। यह फल बाज़ारों में बहुत लोकप्रिय है, खासकर गर्म मौसम में। तरबूज़ को लंबे समय तक उगने, पर्याप्त जगह और अच्छी जल निकासी वाली मिट्टी की ज़रूरत होती है। उन्हें नियमित रूप से खाद की आवश्यकता होती है क्योंकि वे बहुत ज़्यादा खाते हैं। सही देखभाल के साथ, तरबूज़ बहुत फ़ायदेमंद हो सकते हैं।

ओकरा

ओकरा या भिंडी को गर्मी पसंद होती है और गर्मियों में यह अच्छी तरह उगती है। यह कई व्यंजनों में एक मुख्य घटक है और इसके स्वास्थ्य लाभों के लिए जाना जाता है। ओकरा को पूरी धूप और अच्छी जल निकासी वाली मिट्टी की आवश्यकता होती है। इसे नियमित रूप से चुनने से यह अधिक उत्पादन में मदद करता है, जिससे यह किसानों के लिए एक अच्छा विकल्प बन जाता है।

तुलसी, पुदीना और धनिया

- तुलसी, पुदीना और धनिया जैसी जड़ी-बूटियाँ हमेशा लोकप्रिय होती हैं, खासकर गर्मियों में जब ताज़ी सामग्री की मांग होती है। इन जड़ी-बूटियों को उगाना आसान है, इन्हें कम जगह की आवश्यकता होती है और इन्हें अच्छी कीमत पर बेचा जा सकता है। ये छोटे किसानों या सीमित क्षेत्रों वाले लोगों के लिए आदर्श हैं।

मक्का

स्वीट कॉर्न गर्मियों में सबसे ज़्यादा पसंद किया जाने वाला पौधा है और किसानों के लिए बहुत लाभदायक हो सकता है। इसे भरपूर धूप, उपजाऊ मिट्टी और नियमित रूप से पानी देने की आवश्यकता होती है। मकई को अक्सर सीधे ग्राहकों को बेचा जाता है या डिब्बाबंद मकई या पॉपकॉर्न जैसे उत्पादों में बनाया जाता है। इसकी उच्च मांग इसे गर्मियों में रोपण के लिए एक भरोसेमंद विकल्प बनाती है।

आम -

'फलों के राजा' के रूप में जाने जाने वाले आम गर्मियों के लिए बहुत लाभदायक फसल हैं। हालाँकि आम के पेड़ों को बढ़ने में कई साल लगते हैं, लेकिन स्थानीय और अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में उनकी उच्च मांग के कारण वे बहुत अच्छा रिटर्न देते हैं। नए संकर प्रकार तेज़ी से बढ़ते हैं, जिससे किसानों को जल्दी पैसा कमाने में मदद मिलती है।

गर्मियों की खेती के लिए सही फसल चुनने से बहुत फ़ायदा हो सकता है। अच्छी योजना, पानी और मार्केटिंग से किसान अपना मुनाफ़ा बढ़ा सकते हैं। चाहे आप आम और तरबूज जैसे फल उगाएँ या टमाटर और मिर्च जैसी सब्जियाँ, स्थानीय ज़रूरतों को समझना और खेती के तरीकों में सुधार करना ज़रूरी है। सर्वोत्तम प्रथाओं का पालन करके, आप गर्मियों की खेती को एक सफल व्यवसाय बना सकते हैं!

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

भारत सरकार का सख्त कदम, अब गैस कंपनियों को रियल-टाइम डेटा करना होगा साझा

यह कदम आपातकालीन स्थिति से निपटने और आपूर्ति श्रृंखला को टूटने से है बचाना

नई दिल्ली।

पश्चिम एशिया में जारी युद्ध के कारण वैश्विक ऊर्जा बाजार में मची उथल-पुथल को देखते हुए भारत सरकार ने अपनी ऊर्जा सुरक्षा चाक-चौबंद कर दी है। सरकार ने आवश्यक वस्तु अधिनियम को लागू करते हुए तेल और गैस क्षेत्र की सभी कंपनियों के लिए अपना रियल-टाइम डेटा साझा करना अनिवार्य कर दिया है। इस कदम का उद्देश्य किसी भी आपातकालीन स्थिति से निपटने के लिए सटीक योजना बनाना और आपूर्ति श्रृंखला को टूटने से बचाना है।एक अधिकारी ने बताया कि इस अधिनियम के तहत पेट्रोलियम उत्पादों और प्राकृतिक गैस के उत्पादन, प्रोसेसिंग, रिफाइनिंग, भंडारण, परिवहन, आयात, निर्यात, मार्केटिंग, वितरण और उपभोग में लगी सभी संस्थाओं के लिए यह अनिवार्य कर दिया कि वे अपना नवीनतम डेटा पेट्रोलियम योजना और विश्लेषण प्रकोष्ठ को उपलब्ध कराएं। पेट्रोलियम मंत्रालय में संयुक्त सचिव सुजाता शर्मा ने कहा कि सरकार ने एक राजपत्र अधिसूचना जारी की है, जिसके द्वारा पीपीएसी को जानकारी के संग्रह, संकलन, रखरखाव और विश्लेषण के लिए एक नोडल एजेंसी के रूप में नामित किया गया है। पीपीएसी तेल मंत्रालय के डेटा-रखवाले के तौर पर काम करता है। हालिया अधिसूचना इसे और भी विस्तृत डेटा मांगने का अधिकार देती है और वह भी करीब वास्तविक समय में। इससे मंत्रालय को आपात स्थितियों के लिए योजना बनाने में मदद मिलेगी। आवश्यक वस्तु अधिनियम के तहत जारी किसी भी आदेश का उल्लंघन एक आपराधिक अपराध माना जाता है, और इसके लिए कारावास भी हो सकता है। भारत की ऊर्जा स्थिति पर अपने दैनिक अपडेट में, संयुक्त सचिव ने कहा था कि देश में कच्चे तेल की आपूर्ति पर्याप्त है और रिफाइनरियां अपनी पूरी क्षमता से काम कर रही हैं। उन्होंने कहा कि पेट्रोल पंप सामान्य रूप से काम कर रहे हैं और कहीं से भी पेट्रोल खत्म होने की कोई रिपोर्ट नहीं है।मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक प्राकृतिक गैस की उपलब्धता का विवरण देते हुए उन्होंने कहा कि पेट्रोलियम प्राकृतिक गैस (पीएनजी) और संपीड़ित प्राकृतिक गैस (सीएनजी) की आपूर्ति 100फीसदी जारी है।

आरजी कर मेडिकल कॉलेज में फंसी लिफ्ट, दम घुटने से मरीज के परिजन की मौत

मृतक के परिजनों ने किया हंगामा, सुरक्षा पर सवाल पुलिस ने संभाला मोर्चा

कोलकाता। कोलकाता के आरजी कर मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल में शुक्रवार तड़के ट्रामा केयर सेंटर की लिफ्ट में फंसने से एक व्यक्ति की मौत हो गई। घटना के बाद अस्पताल परिसर में सुरक्षा व्यवस्था और प्रबंधन की लापरवाही को लेकर तनाव फैल गया। जानकारी के मुताबिक मृतक अस्पताल में भर्ती मरीज का परिजन बताया जा रहा है, जो पांचवीं मंजिल पर जाने के लिए लिफ्ट में सवार हुआ था। अचानक तकनीकी खराबी के कारण लिफ्ट बीच में ही अटक गई।मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक आरोप है कि उस समय लिफ्ट का संचालन करने के लिए कोई ऑपरेटर वहां मौजूद नहीं था, जिसके कारण समय रहते उसे बाहर नहीं निकाला जा सका और लिफ्ट के अंदर ही उसने दम तोड़ दिया। सुबह घटना की खबर फैलते ही मृतक के परिजनों और अन्य मरीजों के रिश्तेदारों ने अस्पताल प्रशासन के खिलाफ जमकर विरोध प्रदर्शन किया और सुरक्षा पर सवाल उठाए। स्थिति बिगड़ती देख पुलिस तुरंत मौके पर पहुंची। अस्पताल सूत्रों का कहना है कि लिफ्ट में ऑपरेटर की अनुपस्थिति और तकनीकी खराबी के सही कारणों का पता लगाया जा रहा है।

ब्रिक्स देशों के साझा बयान में ईरान पर हुए हमले की निंदा कर एकजुटता की मांग

नई दिल्ली।

विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने कहा कि पिछले दिनों ईरान के विदेश मंत्री अराघची ने विदेश मंत्री एस जयशंकर से बातचीत में ब्रिक्स के साझा बयान में अमेरिका-इजराइल द्वारा ईरान पर किए गए हमले की निंदा की और ब्रिक्स देशों की एकजुटता की मांग की थी। ब्रिक्स की अध्यक्षता वर्तमान में भारत के पास है। नई दिल्ली को सभी ब्रिक्स देशों की सहमति से साझा बयान तैयार करना है। इसमें मुश्किलें है कि ब्रिक्स के कई देश ईरान-इजराइल युद्ध में प्रभावित हैं। ईरान में करीब 9 हजार भारतीय थे। आने वाले वक्त में करीब 842 भारतीय नागरिक अजरबैजान और अर्मीनिया के रास्ते भारत आएंगे।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक जायसवाल ने साप्ताहिक मीडिया ब्रीफिंग में कहा कि कई लोगों ने खुद को दूतावास में रजिस्टर नहीं कराया है। इसलिए, हमारा अंदाजा था कि 9,000 लोग थे। इनमें से, लड़ाई शुरू होने से पहले काफी संख्या में छात्र लौट आए थे। अभी करीब 882 भारतीय नागरिक, जिनमें छात्र और व्यवसाय करने वाले लोगों के साथ-साथ यहां से यात्रा करने वाले तीर्थयात्री भी शामिल हैं, अजरबैजान और आर्मेनिया के रास्तों से लौटने की प्रक्रिया में हैं।

उन्होंने कहा कि वहां यात्रा करने वाले 284 तीर्थयात्रियों में से 280 लौट आए हैं, वे आर्मेनिया के रास्ते आए थे। तीन या चार और बचे हैं, जिनके भी एक या दो दिन में पहुंचने की उम्मीद है। जायसवाल ने बताया कि 772 लोग घर लौटने के लिए ईरानी जमीनी बॉर्डर पार करके आर्मेनिया चले गए, जबकि अजरबैजान के रास्ते पर गतिविधी धीमी है, 110 भारतीय नागरिकों में से कुछ अभी लौटने वाले हैं और कुछ पहले ही भारत वापस आ चुके हैं। पिछले हफ्ते ईरान में भारतीय नागरिकों को दी जा रही मदद के बारे में बताते हुए जायसवाल ने कहा था कि कई नागरिक घर लौट आए हैं, जबकि जो लोग स्वदेश लौटने की योजना बना रहे हैं, उनके लिए मदद जारी है। मंत्रालय ने ईरान छोड़ने की इच्छा रखने वाले भारतीय नागरिकों से तेहरान में भारतीय दूतावास द्वारा जारी की गई सलाह का पालन करने का आग्रह किया था।

बात दें बीते दिनों एनआइए ने 6 यूक्रेनी और 1 अमेरिकी नागरिक को हिरासत में लिया है। जायसवाल ने बताया कि इनके लिए कॉन्सुलर एक्सेस का अनुरोध मिला है।

उत्तराखंड में नए मंत्रियों ने ली शपथ, धामी मंत्रिमंडल में सीएम समेत अब 12 सदस्य

देहरादून।

उत्तराखंड में मंत्रिमंडल का विस्तार हो गया। शुक्रवार को पांच नए मंत्रियों को शपथ दिलाई गई। इनमें मदन कौशिक (हरिद्वार), प्रदीप बत्रा (रुड़की), भरत चौधरी (रुद्रप्रयाग), खजान दास (देहरादून), राम सिंह कैड़ा (नैनीताल) को मंत्री बनाया गया है। अब मंत्रिमंडल में सीएम समेत 12 सदस्य हो गए हैं। राजभवन में शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन हुआ। कार्यक्रम में राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल रिटामेंट गुरमीत सिंह और मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी मौजूद थे।मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक विधायक खजान दास, भरत सिंह चौधरी, मदन कौशिक, राम सिंह केड़ा और विधायक प्रदीप बत्रा ने नए मंत्री के रूप में शपथ ली। बता दें प्रदेश में लंबे समय से कैबिनेट विस्तार की चर्चाएं चल रही थीं। केंद्रीय नेतृत्व के साथ कैबिनेट विस्तार पर कई दौर की बातचीत भी हो चुकी है। धामी सरकार में मंत्रिमंडल में कुल पांच पद खाली थे।

उपराष्ट्रपति राधाकृष्णन 21 और 22 मार्च को रहेंगे महाराष्ट्र दौरे पर

नागपुर, मुंबई और पुणे में विभिन्न कार्यक्रमों में लेंगे हिस्सा, युवा संसद और दीक्षांत समारोह में रहेंगे शामिल

नई दिल्ली। देश के उपराष्ट्रपति सी.पी. राधाकृष्णन 21 और 22 मार्च, 2026 को महाराष्ट्र के दो दिवसीय दौरे पर रहेंगे। पदभार ग्रहण करने के बाद यह उनका पहला महाराष्ट्र दौरा होगा, जिसमें वे कई महत्वपूर्ण कार्यक्रमों में भाग लेंगे।अपने दौरे के पहले दिन 21 मार्च को उपराष्ट्रपति राधाकृष्णन नागपुर पहुंचेंगे, जहां वे महर्षि व्यास सभागार में आयोजित भारतीय युवा संसद के 29वें राष्ट्रीय सत्र के उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होंगे। इस कार्यक्रम में देशभर से आए युवा प्रतिभागियों को संबोधित करने की संभावना है। इसी दिन बाद में उपराष्ट्रपति मुंबई जाएंगे। यहां वे लोक भवन में आयोजित रतन टाटा महाराष्ट्र राज्य कौशल विश्वविद्यालय के पहले दीक्षांत समारोह में भाग लेंगे। इसके अलावा वे 64वें जैन दीक्षा समारोह में भी उपस्थित रहेंगे, जो धार्मिक और सामाजिक दृष्टि से महत्वपूर्ण आयोजन माना जाता है। दौरे के दूसरे दिन 22 मार्च को उपराष्ट्रपति पुणे के उरुली कंचन स्थित निसर्गोपचार आश्रम के स्थापना दिवस कार्यक्रम में शामिल होंगे। यह आश्रम प्राकृतिक चिकित्सा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में अपनी विशेष पहचान रखता है। इस दौरे को उपराष्ट्रपति के जनसंपर्क और विभिन्न सामाजिक, शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों से जुड़ाव के रूप में देखा जा रहा है। महाराष्ट्र के तीन प्रमुख शहरों में आयोजित इन कार्यक्रमों के माध्यम से वे युवाओं, शिक्षण संस्थानों और सामाजिक संगठनों से संवाद करेंगे।

ग्रेट निकोबार परियोजना का आदिवासियों ने किया विरोध, राहुल से मुलाकात कर बताई समस्या

नई दिल्ली।

ग्रेट निकोबार द्वीप के आदिवासी प्रमुखों का एक प्रतिनिधिमंडल, आदिवासी कांग्रेस के नेताओं के साथ, लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी से मुलाकात की। प्रतिनिधिमंडल ने प्रस्तावित ग्रेट निकोबार परियोजना का कड़ा विरोध करते हुए कहा कि यह परियोजना उनके पारंपरिक जीवन, संस्कृति और द्वीप के नाजुक पर्यावरण के लिए गंभीर खतरा है। आदिवासी नेताओं ने यह भी आरोप लगाया कि परियोजना को मंजूरी देने की प्रक्रिया के दौरान उनकी सहमति सही तरीके से नहीं ली गई।मुलाकात के दौरान आदिवासी प्रमुखों ने अपनी चिंताओं को विस्तार से रखते हुए कहा कि इस परियोजना से उनके आजीविका के साधनों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा और पर्यावरणीय संतुलन भी बिगड़ सकता है। इस पर राहुल गांधी ने प्रतिनिधिमंडल को आश्वस्त किया कि कांग्रेस पार्टी उनके साथ मजबूती से खड़ी रहेगी और उनके अधिकारों एवं हितों की रक्षा के लिए उनकी आवाज को हर मंच पर उठाएगी।

नए स्मार्टफोन में आधार ऐप पहले से इंस्टॉल करने की तैयारी में सरकार!

टेक कंपनियों ने सुरक्षा और निजता का हवाला देकर प्रस्ताव का किया कड़ा विरोध

नई दिल्ली।

भारत सरकार और दुनिया की दिग्गज टेक कंपनियों के बीच एक नया विवाद खड़ा हो गया है। केंद्र सरकार चाहती है कि देश में बिकने वाले हर नए स्मार्टफोन में आधार ऐप पहले से इंस्टॉल हो। हालांकि, एप्पल, सेमसंग और गूगल जैसी बड़ी कंपनियों ने सुरक्षा और निजता का हवाला देते हुए इस प्रस्ताव का कड़ा विरोध किया। यह विवाद ऐसे समय में सामने आया है जब कुछ ही हफ्तों पहले संचार साथी ऐप को अनिवार्य बनाने के सरकार के फैसले पर भी कंपनियों ने आपत्ति जताई थी। आधार सरकार का बायोमेट्रिक पहचान प्रोग्राम है, जिसमें 1.34 अरब नागरिक रजिस्टर्ड हैं।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण ने आईटी मंत्रालय के जरिए स्मार्टफोन निर्माताओं के सामने यह प्रस्ताव रखा है। सरकार का तर्क है कि आधार 1.34 अरब नागरिकों की पहचान का मुख्य आधार है, इसलिए ऐप पहले से मौजूद होने पर लोगों को बैंकिंग, टेलीकॉम और एयरपोर्ट वेरिफिकेशन के लिए इसे अलग से डाउनलोड नहीं करना पड़ेगा।

कानपुर में तेज रफ्तार टैंकर ने बाइक को मारी टक्कर, तीन दोस्तों की मौके पर मौत

अंतिम संस्कार में बाइक से जा रहे थे तीनों दोस्त, टैंकर ने टक्कर मारकर 100 मीटर तक घसीटा

कानपुर । उत्तर प्रदेश के कानपुर जिले के रेनुआ क्षेत्र के पास शखा जनवारा गांव के नजदीक एक भयानक सड़क हादसा हुआ। तेज रफ्तार दूध के टैंकर ने पीछे से बाइक को टक्कर मारी। टक्कर इतनी जोरदार थी कि बाइक सवार तीनों युवक उछलकर टैंकर के नीचे आ गए और लगभग 100 मीटर तक सड़क पर घसीटे गए। घटना में तीनों की मौके पर ही मौत हो गई। पुलिस ने मृतकों की पहचान 35 वर्षीय बलवान, 32 वर्षीय अजय कुमार और 29 वर्षीय सूरज के रूप में की है। सभी घाटमपुर के नौबस्ता इलाके के रहने वाले थे और घनिष्ठ मित्र थे। तीनों उसी समय यमुना घाट पर 60 वर्षीय प्रेमा देवी के अंतिम संस्कार में शामिल होने जा रहे थे, जिनका एक दिन पहले निधन हुआ था। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार टैंकर की रफ्तार बहुत तेज थी। टक्कर के बाद चालक मौके से फरार हो गया। पुलिस ने सूचना मिलते ही तुरंत मौके पर पहुंचकर जांच शुरू की, लेकिन तब तक हालात तनावपूर्ण हो चुके थे। हादसे के बाद मृतकों के परिजन और ग्रामीण सड़क पर उतर आए और हाईवे जाम कर प्रदर्शन शुरू कर दिया। उन्होंने मृतकों के शव सड़क पर रखकर न्याय की मांग की। जब पुलिस ने क्रेन से टैंकर हटाने की कोशिश की, तो प्रदर्शनकारी उसके सामने लेट गए, जिससे जाम और लंबा हो गया। लगभग 10 किलोमीटर लंबा जाम तीन घंटे तक चला। घटना स्थल पर घाटमपुर के सहायक पुलिस आयुक्त और उपजिलाधिकारी पहुंचे। उन्होंने परिजनों से बातचीत कर सरकारी मदद और मुआवजे का आश्वासन दिया। परिजनों ने ज्ञापन सौंपकर आवास सहायता और दुर्घटना योजना के तहत अन्य सहायता की मांग की। पुलिस ने घटना के संदर्भ में मामला दर्ज कर लिया है और फरार टैंकर चालक की तलाश शुरू कर दी है।

तेज हवा के साथ हुई बारिश से दिल्ली-एनसीआर को प्रदूषण से मिली राहत, अलर्ट जारी

नई दिल्ली।

दिल्ली-एनसीआर में पिछले दो दिनों की तरह आज भी मौसम का मिजाज बदला हुआ नजर आ रहा है। हवा और बारिश से प्रदूषण में राहत मिली है।

केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के आंकड़ों के मुताबिक, बारिश और तेज हवाओं के कारण दिल्ली-एनसीआर के अधिकांश इलाकों में एयर क्वालिटी इंडेक्स (एक्यूआई) अब ग्रीन और येलो जोन में पहुंच गया है।

अलीपुर, आया नगर और कॉमनवेल्थ स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स जैसे इलाकों में एक्यूआई 100 से नीचे दर्ज किया गया है, जो संतोषजनक श्रेणी में आता है।

आनंद विहार, बवाना और चांदनी चौक जैसे व्यस्त इलाकों में एक्यूआई 116 से 178 के बीच रहा, जो मध्यम श्रेणी को दर्शाता है। हालांकि, बुराड़ी क्षेत्र में प्रदूषण का स्तर अभी भी चिंताजनक है, जहां एक्यूआई 366 के साथ रेड जोन में बना हुआ है। नोएडा और गाजियाबाद के भी अधिकांश सेक्टरों में प्रदूषण का स्तर मध्यम श्रेणी में दर्ज किया गया है, जिससे स्थानीय निवासियों को सांस लेने में काफी राहत मिली है।

भारतीय मौसम विभाग के ताजा पूर्वानुमान के अनुसार, पूरे क्षेत्र में बादलों का डेरा रहेगा और दिनभर हल्की से मध्यम बारिश के साथ तेज हवाएं चलने की संभावना है। विभाग ने चेतावनी दी है कि क्षेत्र में 30 से 40 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से हवाएं चलेंगी, जो झोंकों के रूप में 50 किमी प्रति घंटे तक पहुंच सकती हैं। इसे देखते हुए आम जनता को सतर्क रहने की सलाह दी गई है। आज अधिकतम तापमान 25 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 13 डिग्री सेल्सियस के आसपास दर्ज किया गया है। सुबह से ही आसमान में छाई धुंध और बादलों के बीच कई इलाकों में हल्की बौछारें देखने को मिलीं।

मौसम वैज्ञानिकों का कहना है कि आज सुबह से लेकर रात तक अलग-अलग चरणों में गरज-चमक के साथ बारिश का सिलसिला जारी रह सकता है। इस मौसमी बदलाव का सबसे सकारात्मक असर क्षेत्र की वायु गुणवत्ता पर पड़ा है।

आगामी दिनों की बात करें तो 20 मार्च को भी बादल छाए रहने और गरज-चमक की संभावना बनी हुई है।

दिल्ली अग्निकांड शोकसभा: बीजेपी-आप कार्यकर्ता भिड़े, धक्कामुक्की हुई, कुर्सियां फेंकी

केजरीवाल बोले- बीजेपी को पीड़ितों की चिंता नहीं, पीड़ितों से सहानुभूति जताने रोका

नई दिल्ली।

दिल्ली अग्निकांड में मारे गए 9 लोगों की शोकसभा में आम आदमी पार्टी और बीजेपी कार्यकर्ताओं के बीच झड़प हो गई। इस घटना के वायरल वीडियो में कुर्सी फेंकते और धक्का-मुक्की करते लोग दिखे। आप नेता सौरभ भारद्वाज ने आरोप लगाया कि बीजेपी के विधायक कुलदीप सोलंकी के गुंडों ने उनको कुर्सी फेंककर मारी। पूर्व सीएम अरविंद केजरीवाल ने कहा कि बीजेपी को पीड़ितों की चिंता नहीं है। कोई पीड़ितों से सहानुभूति जताने आता है तो बीजेपी के लोग उनसे मिलने भी नहीं देते। बता दें बुधवार को पालम इलाके की चार मंजिला इमारत में आग लग गई थी। इसमें 3 नाबालिग लड़कियों समेत 9 लोगों की मौत हो गई थी। पालम अग्निकांड के बाद राजनीतिक दलों के नेता पीड़ित परिवार से मिलने पहुंच रहे थे। आप संयोजक अरविंद केजरीवाल के आने से पहले सौरभ भारद्वाज और बीजेपी विधायक कुलदीप सोलंकी कार्यकर्ताओं के साथ शोकसभा में पहुंचे। इस दौरान सौरभ ने एक वीडियो दिखाकर बचाव कार्य में हाइड्रोलिक मशीन फेल होने का दावा किया और प्रशासन पर सवाल उठाए। इसे लेकर दोनों पक्षों में तीखी बहस हुई, जो गाली-गलौज और धक्का-मुक्की तक पहुंच गई। इससे शोकसभा का माहौल बिगड़ गया। बता दें बुधवार को पालम के जिस चार मंजिला घर में आग लगी थी, वह राजेंद्र कश्यप का है। बिल्डिंग के ग्राउंड फ्लोर पर कॉस्मेटिक की दुकान थी और ऊपर परिवार रहता था। जब आग लगी तो धुआं तेजी से अंदर फैलने लगा। परिवार के सदस्य जान बचाने के लिए छत और बालकनी की तरफ भागे। तभी परिवार के लोगों ने करीब दो साल के दो बच्चों को बचाने के लिए उन्हें पहली मंजिल से नीचे फेंक दिया। वहां नीचे खड़े लोगों ने उन बच्चों को संभाला, जिसके बाद दोनों को तुरंत अस्पताल पहुंचाया गया था।

11 साल में शहरों में 8.36 लाख करोड़ खर्च, इसके बाद भी शहरों की हालत बदहाल

नईदिल्ली ।

केंद्र सरकार ने शहरों की व्यवस्था सुधारने के लिए पिछले 11 साल में 8।36 लाख करोड रुपए खर्च किए हैं। इतने भारी भरकम खर्च के बाद भी शहरों की हालत सुधरने की स्थान पर हर साल खराब होती जा रही है।

जनाग्रह की शेपिंग अर्बन इंडिया बाय डिजाइन,नाब बाय डिफ़ॉल्ट की रिपोर्ट प्रकाशित हुई है। रिपोर्ट के अनुसार पिछले 18 सालों में शहरी क्षेत्र का एरिया 25 लाख हेक्टेयर बढा है। शहरों का विकास अनियंत्रित तरीके से हुआ है। जिसके कारण शहरों में रहना पहले की तुलना में और भी मुश्किल हो गया है।

अधिकांश शहरों में वायु प्रदूषण, जल भराव और ड्रेनेज सिस्टम रोड़ों को लेकर स्थितियां बेहद खराब हुई हैं। रिपोर्ट के अनुसार सभी शहरों के लिए एक जैसे विकास मॉडल तैयार किये जा रहे हैं।11 साल में शहरों में 8.36 लाख करोड़ खर्च, इसके बाद भी शहरों की हालत बदहाल

नईदिल्ली (ईएमएस) । केंद्र सरकार ने शहरों की व्यवस्था सुधारने के लिए पिछले 11 साल में 8।36 लाख करोड रुपए खर्च किए हैं। इतने भारी भरकम खर्च के बाद भी शहरों की हालत सुधरने की स्थान पर हर साल खराब होती जा रही है।

जनाग्रह की शेपिंग अर्बन इंडिया बाय डिजाइन,नाब बाय डिफ़ॉल्ट की रिपोर्ट प्रकाशित हुई है। रिपोर्ट के अनुसार पिछले 18 सालों में शहरी क्षेत्र का एरिया 25 लाख हेक्टेयर बढा है। शहरों का विकास अनियंत्रित तरीके से हुआ है। जिसके कारण शहरों में रहना पहले की तुलना में और भी मुश्किल हो गया है।

अधिकांश शहरों में वायु प्रदूषण, जल भराव और ड्रेनेज सिस्टम रोड़ों को लेकर स्थितियां बेहद खराब हुई हैं। रिपोर्ट के अनुसार सभी शहरों के लिए एक जैसे विकास मॉडल तैयार किये जा रहे हैं। विकास मॉडल तैयार करने वाली संस्था के पास विकास का डाटा उपलब्ध नहीं है। इसलिए शहरों के विकास सही तरीके से नहीं हो पा रहे हैं।

यह रिपोर्ट नीति आयोग के सदस्य राजीव गोवा तथा शहरी मंत्रालय में अतिरिक्त सचिव डी धारा तथा भाजपा सांसद तेजस्वी सूर्या की उपस्थिति में रिपोर्ट जारी की गई है।

रिपोर्ट के अनुसार दिल्ली में वायु प्रदूषण, मुंबई में आवास संकट, बेंगलुरु में ट्रैफिक जाम की समस्या, कोलकाता में घटती हरियाली, जयपुर में बढ़ती सड़क दुर्घटनाएं, इंदौर में दूषित पानी, झांसी में जर्जर बुनियादी ढांचा का उल्लेख रिपोर्ट में विशेष रूप से किया गया है।

जो रिपोर्ट जारी की गई है।उसके अनुसार शहरी सुधार के लिए आवश्यक सुझाव दिए गए हैं। जिसमें सार्वजनिक परिवहन को प्राथमिकता, छोटे और मध्यम शहरों के लिए अलग मॉडल तैयार किए जाने की अनुशंसा की गई है। पिछले वर्षों में शहरी विकास का सबसे बड़ा दुष्प्रभाव जल भराव के रूप में देखने को मिला है। हर शहर में थोड़ी सी बारिश होने पर पानी की निकासी नहीं हो पाती है। एक बड़ी आबादी को बाढ़ जैसी आपदा से जूझना पड़ता है। इतनी भारी राशि खर्च होने के बाद भी शहरों के विकास के लिए जो कार्य होना था वह नहीं हुआ। इस बात की चिंता रिपोर्ट में जताई गई है।

एस जे/20मार्च2026

विकास मॉडल तैयार करने वाली संस्था के पास विकास का डाटा उपलब्ध नहीं है। इसलिए शहरों के विकास सही तरीके से नहीं हो पा रहे हैं।

यह रिपोर्ट नीति आयोग के सदस्य राजीव गोवा तथा शहरी मंत्रालय में अतिरिक्त सचिव डी धारा तथा भाजपा सांसद तेजस्वी सूर्या की उपस्थिति में रिपोर्ट जारी की गई है।

रिपोर्ट के अनुसार दिल्ली में वायु प्रदूषण, मुंबई में आवास संकट, बेंगलुरु में ट्रैफिक जाम की समस्या, कोलकाता में घटती हरियाली, जयपुर में बढ़ती सड़क दुर्घटनाएं, इंदौर में दूषित पानी, झांसी में जर्जर बुनियादी ढांचा का उल्लेख रिपोर्ट में विशेष रूप से किया गया है।जो रिपोर्ट जारी की गई है।उसके अनुसार शहरी सुधार के लिए आवश्यक सुझाव दिए गए हैं। जिसमें सार्वजनिक परिवहन को प्राथमिकता, छोटे और मध्यम शहरों के लिए अलग मॉडल तैयार किए जाने की अनुशंसा की गई है। पिछले वर्षों में शहरी विकास का सबसे बड़ा दुष्प्रभाव जल भराव के रूप में देखने को मिला है। हर शहर में थोड़ी सी बारिश होने पर पानी की निकासी नहीं हो पाती है। एक बड़ी आबादी को बाढ़ जैसी आपदा से जूझना पड़ता है। इतनी भारी राशि खर्च होने के बाद भी शहरों के विकास के लिए जो कार्य होना था वह नहीं हुआ। इस बात की चिंता रिपोर्ट में जताई गई है।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

संक्षिप्त समाचार

इस्राइल के आरोप पर गाजा में सहायता सामग्री की होगी जांच

गाजा, एजेंसी। यूनीसेफ ने कहा है कि वह इस आरोप की जांच करेगा कि गाजा भेजी गई राहत सामग्री में तंबाकू छिपाकर भेजा गया था। इस्राइल की एजेंसी ने दावा किया कि हाइजीन किट में निकोटिन से जुड़ी चीजें मिली हैं, जिसके बाद सहायता रोक दी गई। यूनीसेफ ने कहा कि वह इस मामले को गंभीरता से ले रहा है और जांच शुरू कर दी गई है। गाजा में पहले से ही हालात खराब हैं और इस तरह की रुकावट से लोगों की मुश्किलें और बढ़ सकती हैं।

टेक्सास में मालगाड़ी के कई डिब्बे पटरी से उतरे

टेक्सास , एजेंसी। अमेरिका के टेक्सास राज्य में एक मालगाड़ी के कई डिब्बे पटरी से उतर गए, जिससे इथेनॉल का रिसाव हुआ। यह घटना रिचमंड शहर के पास हुई, लेकिन राहत की बात है कि इसमें कोई घायल नहीं हुआ। अधिकारियों ने बताया कि रिसाव को जल्दी ही नियंत्रित कर लिया गया और लोगों के लिए कोई बड़ा खतरा नहीं है। हादसे के कारण कुछ समय के लिए यातायात प्रभावित हुआ, लेकिन बाद में स्थिति सामान्य हो गई।

ब्राजील में पुलिस कार्रवाई, ड्रग माफिया समेत आठ मारे गए

रियो डी जेनेरियो, एजेंसी। ब्राजील के रियो डी जेनेरियो में पुलिस ने एक बड़े ऑपरेशन में 8 लोगों की मौत हो गई, जिनमें एक कुख्यात ड्रग माफिया भी शामिल था। पुलिस के अनुसार यह कार्रवाई अपराधियों के खिलाफ की गई थी। इसके बाद बदमाशों ने एक बस में आग लगा दी और सड़कों को जाम कर दिया। पुलिस ने कई लोगों को गिरफ्तार किया है और इलाके में सुरक्षा बढ़ा दी गई है। इस घटना ने शहर की सुरक्षा व्यवस्था पर फिर से सवाल खड़े कर दिए हैं।

अमेरिका में कोविड मौतों पर नई रिपोर्ट

वाशिंगटन, एजेंसी। एक नई स्टडी में सामने आया है कि कोरोना महामारी के शुरुआती दौर में अमेरिका में वास्तविक मौतें आधिकारिक आंकड़ों से कहीं ज्यादा थीं। रिपोर्ट के अनुसार 2020 और 2021 में करीब 8.4 लाख मौतें दर्ज की गईं, लेकिन लगभग 1.55 लाख मौतें ऐसी थीं जो रिकॉर्ड में शामिल नहीं हो पाईं। यानी करीब 16 प्रतिशत मौतें गिनी ही नहीं गईं। शोधकर्ताओं ने बताया कि ज्यादातर अनगिनी मौतें अस्पताल के बाहर हुईं, जहां लोगों का टेस्ट नहीं हो पाया। खासकर हिस्पैनिक और अन्य गरीब समुदाय ज्यादा प्रभावित हुए। शुरुआती समय में टेस्टिंग की सुविधा कम थी और कई जगह मौत की जांच सही तरीके से नहीं हुई।

नाइजीरिया में बड़ा हमला नाकाम

अबूजा, एजेंसी। नाइजीरिया के उत्तर-पूर्वी इलाके में सेना ने आतंकियों के एक बड़े हमले को नाकाम कर दिया। सेना के मुताबिक इस कार्रवाई में करीब 80 आतंकी मारे गए। ये हमलावर बोको हराम या इस्लामिक स्टेट से जुड़े हो सकते हैं। हमला रात के समय एक सैन्य बेस पर किया गया था, लेकिन सेना पहले से तैयार थी और उसने जवाबी कार्रवाई की। इस दौरान चार सैनिक घायल भी हुए। हाल ही में इलाके में आत्मघाती हमलों में 23 लोगों की मौत हुई थी, जिससे सुरक्षा को लेकर चिंता बढ़ गई है।

रूसी टैंकर से खतरा- यूरोपीय देशों ने जताई चिंता

मास्को, एजेंसी। यूरोप के पांच देशों ने एक रूसी टैंकर को लेकर चिंता जताई है, जो भूमध्य सागर में बिना चालक के बह रहा है। यह जहाज तरलीकृत गैस लेकर जा रहा था और हाल ही में हमले में क्षतिग्रस्त हो गया। नेताओं ने चेतावनी दी है कि इससे बड़ा पर्यावरणीय खतरा पैदा हो सकता है और विस्फोट का भी डर है। इसलिए यूरोपीय संघ से तुरंत कार्रवाई की मांग की गई है।

न्यूयॉर्क के जेल में ड्रोन से तस्करी

न्यूयॉर्क , एजेंसी। अमेरिका के न्यूयॉर्क की एक जेल में ड्रोन के जरिए हथियार और अन्य सामान गिराने का मामला सामने आया है। अधिकारियों के अनुसार ड्रोन ने रात में चाकू, मोबाइल फोन, नशीला पदार्थ और अन्य चीजें जेल परिसर में गिराईं। हालांकि कर्मचारियों ने तुरंत सामान बरामद कर लिया। इस घटना के बाद सुरक्षा को लेकर चिंता बढ़ गई है और जांच शुरू कर दी गई है।

अमेरिका के भीषण जंगल की आग

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका के नेब्रास्का राज्य में लगी जंगल की आग पर काबू पाने की कोशिशें सातवें दिन भी जारी हैं। इस आग में अब तक एक व्यक्ति की मौत हो चुकी है और हजारों वर्ग किलोमीटर जमीन जल चुकी है। तेज हवाओं के कारण आग तेजी से फैली, लेकिन अब मौसम थोड़ा शांत होने से राहत मिली है। फिर भी खतरा अभी पूरी तरह टला नहीं है और अधिकारियों ने लोगों को सतर्क रहने को कहा है।

ट्रंप के टैरिफ का उल्टा असर: अमेरिकी उद्योगों को नुकसान, श्रमिक वर्ग भी नाराज; उद्योगपतियों ने उठाए सवाल

वाशिंगटन, एजेंसी। पूरी दुनिया में टैरिफ लगाकर अमेरिकी जजों की भी निंदा करने वाले राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को इस मुद्दे पर अपने ही देश में अपने ही प्रशंसकों की आलोचना का सामना करना पड़ रहा है। इसका कारण ट्रंप के लगाए टैरिफ से देश के उद्योगों व निर्माताओं को मदद मिलने के बजाय नुकसान होना है। टैरिफ के फैसले से अमेरिका में कई उद्योग और कारोबार इन दिनों अच्छे-खासे नुकसान में हैं। इससे अमेरिकी विनिर्माण को भी अपेक्षित परिणाम नहीं मिल रहे हैं। श्रमिक वर्ग भी इस फैसले से आहत है। ट्रंप के समर्थक उद्योगपति जे. एलन ने कहा, उद्योगपतियों ने इस भरोसे के साथ ट्रंप को वोट दिया था कि रिपब्लिकन नेता करों में कटौती और नियमों में ढील देंगे, जिससे उनके विनिर्माण व्यवसाय को मदद मिलेगी। लेकिन ट्रंप के आर्थिक एजेंडे के मूल में मौजूद टैरिफ ने उनकी कंपनी एलन इंजीनियरिंग कॉर्प को चौपट किया है। आयात करों ने विदेशों में बने इंजनों, स्टील, गियरबॉक्स और क्लच की लागत भी बढ़ा दी है। इसके चलते पावर ट्रॉवेल निर्माण के दाम एक लाख डॉलर तक हो सकते हैं। ट्रंप ने टैरिफ को अमेरिकी कारखानों की मदद करने वाला बताया था लेकिन देखने में आ रहा है कि वे वास्तव में देशभर के कई उद्योगों और उत्पादन इकाइयों को कुचल रहे हैं।

कीमतें बढ़ेंगी, हालात और भी गंभीर : ट्रंप प्रशासन फरवरी में सुप्रीम कोर्ट से अवैध घोषित आयात करों के स्थान पर नए टैरिफ बनाने के लिए संघर्ष

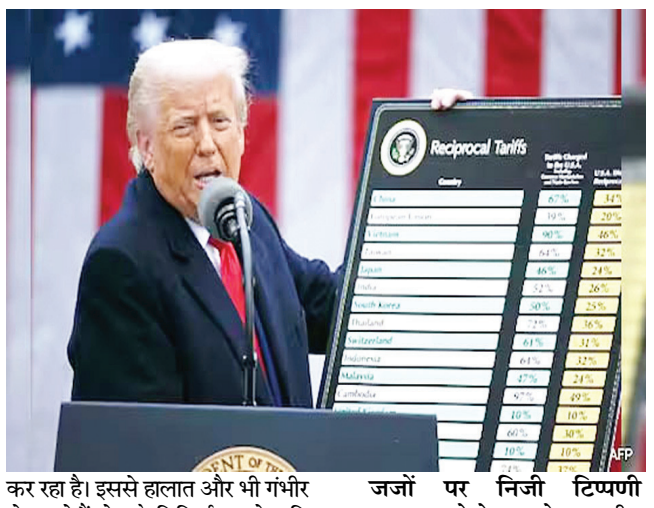

कर रहा है। इससे हालात और भी गंभीर हो सकते हैं। देश के विनिर्माण उद्योगपति क्रेसन क्रू ने कहा, टैरिफ के कारण उन्होंने 2025 में अपनी कंपनी को घाटे में चलाया। उनके यहां कर्मचारियों की संख्या 205 से घटकर 140 रह गई। बिक्री में कमी पर भी उन्होंने कीमतें 8-10% बढ़ाई हैं।

कंपनियों के लिए योजना बनाना भी मुश्किल : अगले दशक में संघीय घाटे में वृद्धि होने का अनुमान है। आर्थिक नीति समूह एम्प्लाई अमेरिका के ईडी स्कंदा अमरनाथ ने कहा, ट्रंप के टैरिफ से विनिर्माण में कोई वृद्धि नहीं दिखती। इस क्षेत्र में कोई नया पुनर्जागरण भी नहीं हो रहा है। टैरिफ पर अनिश्चितता ने निवेश को हतोत्साहित किया है। टैरिफ लगाने के लिए कांग्रेस को दरकिनार करने से छोटी विनिर्माण कंपनियों को योजना बनाना भी मुश्किल कर दिया है।

जजों पर निजी टिप्पणी खतरनाक, इसे रोकना होगा : सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश जॉन रॉबर्ट्स ने चेताया कि संघीय जजों की निजी आलोचना खतरनाक है और इसे रोकना होगा। यह चेतावनी उन्होंने राष्ट्रपति ट्रंप द्वारा प्रशासन के खिलाफ फैसला सुनाने वाले एक संघीय जज को सनकी, नीच, बेईमान और पूरी तरह से बेकाबू कहने के दो दिन बाद दी। रॉबर्ट्स ने ट्रंप या किसी और को निशाना बनाने से परहेज किया और जोर दिया कि जजों पर हमले किसी एक राजनीतिक दृष्टिकोण से नहीं हो रहे हैं। रॉबर्ट्स ने ह्यूस्टन में कहा, न्यायिक राय की आलोचना न्यायिक पेशे का हिस्सा है और यह स्वस्थ भी हो सकती है। लेकिन जब आलोचना कानूनी विश्लेषण से हटकर दूसरी दिशा में चली जाती है तो मामला अलग हो जाता है।

जज बोसबर्ग को कहा- सिंड्रोम पीड़ित : ट्रंप ने न्यायाधीश बोसबर्ग के बारे में लिखा कि वह एक सनकी, दुष्ट, बेईमान और पूरी तरह से बेकाबू जज हैं, जो ट्रंप डिरेजमेंट सिंड्रोम के उच्चतम स्तर से पीड़ित हैं और वर्षों से मेरे लोगों और मेरे पीछे पड़े हैं। पिछले साल, रॉबर्ट्स ने सार्वजनिक रूप से ट्रंप की बोसबर्ग के महाभियोग की मांग को खारिज कर दिया था।

एक वर्ष में नौकरियां घटीं... ट्रंप के सत्ता में आने पर अमेरिकी विनिर्माण क्षेत्र में नौकरियां घटी हैं। इससे श्रमिक भी प्रभावित हैं। कारखानों से कर्मचारियों की छंटनी से एक वर्ष में 98,000 विनिर्माण नौकरियां खत्म हो गईं।

अमेरिकी सैन्य बेस के पास संदिग्ध ड्रोन दिखने से हड़कंप, हेगसेथ-रुबियो वहीं थे मौजूद : वॉशिंगटन , एजेंसी। पश्चिम एशिया संकट गहराता जा रहा है और पश्चिम एशिया के विभिन्न देश इसकी जद में हैं। अब इसकी आंच अमेरिका की जमीन तक पहुंचती दिख रही है। दरअसल गुरुवार को अमेरिका के एक सैन्य अड्डे के ऊपर संदिग्ध ड्रोन मंडराता दिखाई दिया। जिस सैन्य अड्डे पर ड्रोन मंडरा रहा था, उस सैन्य अड्डे में अमेरिका के विदेश मंत्री मार्को रुबियो और रक्षा मंत्री पीट हेगसेथ के आवास हैं। यही वजह है कि इस घटना के बाद अमेरिका में हड़कंप मच गया है। वॉशिंगटन पोस्ट की एक रिपोर्ट के अनुसार, वॉशिंगटन स्थित अमेरिकी सैन्य अड्डे फोर्ट मैकनेयर के ऊपर संदिग्ध ड्रोन दिखाई दिया।

ट्रंप दुनिया के सबसे ताकतवर नेता, वे किसी के दबाव में नहीं: व्हाइट हाउस

वाशिंगटन, एजेंसी। व्हाइट हाउस की प्रेस सचिव कैरोलिन लेविट ने साफ कर दिया है कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप किसी दूसरे देश के इशारे पर काम नहीं करते। उन्होंने कहा कि ट्रंप दुनिया के सबसे शक्तिशाली देश के नेता हैं और वे केवल अमेरिका के हित को ध्यान में रखकर ही फैसले लेते हैं।

जो केंट ने लगाए थे आरोप : लेविट का यह बयान नेशनल काउंटर टेररिज्म सेंटर के डायरेक्टर जो केंट के इस्तीफे के बाद आया है। जो केंट ने अपने पद से हटने के बाद गंभीर आरोप लगाए थे। उन्होंने कहा था कि अमेरिका ने इस्राइल और वहां की ताकतवर लॉबी के दबाव में आकर ईरान के साथ युद्ध शुरू किया है। केंट ने यह भी दावा किया था कि ट्रंप को कोई दूसरा देश नियंत्रित कर रहा है।

जो केंट के आरोपों पर क्या बोलीं प्रेस सचिव: इन आरोपों पर पलटवार करते हुए लेविट ने कहा कि राष्ट्रपति ने जो केंट को देश की सेवा करने का मौका दिया था। लेकिन उन्होंने झूठ से भरे एक लेटर के साथ इस्तीफा दे दिया। लेविट के अनुसार, ट्रंप दुनिया के सबसे शक्तिशाली देश के सेना के प्रमुख हैं और उन्हें कोई नहीं बताता कि क्या करना है। उन्होंने कहा कि जो व्यक्ति ईरान को आतंकवाद का समर्थक नहीं मानता, वह आतंकवाद विरोधी विभाग का प्रमुख नहीं हो सकता।

लेविट ने बताया कि ईरान बहुत तेजी से बैलिस्टिक मिसाइलें बना रहा था ताकि वह परमाणु बम तैयार कर सके। अमेरिकी खुफिया जानकारी के अनुसार, ईरान

अमेरिकी सैनिकों और ठिकानों पर हमला करने की योजना बना रहा था। इसलिए ट्रंप ने अपनी सेना और संपत्ति की सुरक्षा के लिए ईरान पर हमले का फैसला लिया।

ट्रंप के चीन दौरे पर क्या बोली प्रेस सचिव : चीन यात्रा के बारे में लेविट ने बताया कि ट्रंप और चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग की टीमें नई तारीख तय करने पर काम कर रही हैं। मई में ट्रंप के कुछ जरूरी घरेलू कार्यक्रम हैं, इसलिए फिलहाल यह यात्रा टाल दी गई है। उन्होंने कहा कि शी जिनपिंग भी काफी व्यस्त हैं, इसलिए जल्द ही दोनों पक्ष मिलकर नई तारीखों का एलान करेंगे। जब लेविट से पूछा गया कि क्या जो केंट के इस्तीफे से नेशनल इंटेलिजेंस की डायरेक्टर तुलसी गबार्ड की नौकरी को कोई खतरा है, तो उन्होंने इससे इनकार किया। उन्होंने कहा कि राष्ट्रपति ने इस बारे में कुछ नहीं कहा है और उन्हें ऐसी कोई जानकारी नहीं है। लेविट ने यह भी जानकारी दी कि ट्रंप पश्चिम एशिया के संकट को लेकर यूरोपीय और खाड़ी देशों के सहयोगियों से लगातार बात कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि अमेरिकी सेना बहुत सक्षम है और उसके पास अभी भी कई गुप्त रणनीतियां हैं।

पार्टी 'मैं' केंद्रित राजनीति से ऊपर नहीं उठी तो पुराने दलों से भी बदतर हाल होगा- लामिछाने

काठमांडू, एजेंसी। राष्ट्रीय स्वतंत्र पार्टी (आरएसपी) के सभापति रवि लामिछाने ने चेतावनी दी है कि यदि पार्टी 'मैं' केंद्रित राजनीति से ऊपर नहीं उठ सकी, तो उसका हाल पुराने राजनीतिक दलों से भी खराब हो सकता है। बुधवार को ग्वार्को में आयोजित पार्टी के दो दिवसीय अभिमुखीकरण कार्यक्रम के समापन के दौरान उन्होंने यह बात कही। हाल में लगभग दो तिहाई बहुमत के करीब पहुंची पार्टी के संदर्भ में उन्होंने सांसदों को संयमित और जिम्मेदार रहने की सलाह दी। सांसदों से उन्होंने जनता का शासक नहीं, बल्कि सेवक बनकर काम करने का आग्रह किया। लामिछाने ने कहा, जनता ने सोच समझकर पार्टी को समर्थन दिया है, इसलिए इसे चुनौती के रूप में लिया जाना चाहिए। पुराने दलों को जनता ने 36 साल तक इंतजार किया, हमें 36 दिन भी नहीं मिलेंगे। उन्होंने चेताया, मंत्रिपरिषद गठन को लेकर उन्होंने कहा कि अब तक कोई ठोस निर्णय नहीं हुआ है। मंत्रिपरिषद का कोई अंतिम निर्णय नहीं हुआ है।

'राइट टू रिकॉल' व्यवस्था को लागू करने पर जोर : उन्होंने 'राइट टू रिकॉल' व्यवस्था को सख्ती से लागू करने की बात कही। लामिछाने ने कहा कि नेपाली जनता ने पार्टी पर अभूतपूर्व भरोसा जताया है, इसलिए उसकी जिम्मेदारी को समझना जरूरी है। इस कार्यक्रम में पार्टी के वरिष्ठ नेता बालेन शाह शामिल नहीं हुए। लामिछाने ने उनका नाम भी नहीं लिया।

फ्रांस लिब्रे- फ्रांस का नया परमाणु चलित युद्धपोत : पेरिस, एजेंसी। फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों ने देश के नए परमाणु ऊर्जा से चलने वाले विमानवाहक पोत का नाम 'फ्रांस लिब्रे' रखा है। यह जहाज 2038 तक तैयार होगा और इसमें लगभग 30 राफेल लड़ाकू विमान और 2000 सैनिक रहेंगे। इसकी लागत करीब 10 अरब यूरो बताई गई है। मैक्रों ने कहा कि यह नाम फ्रांस की आजादी और ताकत का प्रतीक है। यह जहाज फ्रांस की सैन्य शक्ति को और मजबूत करेगा और खासकर मध्य-पूर्व क्षेत्र में उसकी मौजूदगी बढ़ाएगा।

गैस फील्ड पर हमला हुआ तो करारा जवाब देंगे, कतर के ऊर्जा ठिकाने पर हमले के बाद ईरान की धमकी

तेहरान, एजेंसी। ईरान की सेना 'इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स' (आईआरजीसी) ने क्षेत्र में अमेरिका से जुड़े तेल ठिकानों पर हमलों की जिम्मेदारी ली है। आईआरजीसी ने बताया कि ये हमले 'ऑपरेशन ट्रू प्रॉमिस 4' के 63वें चरण का हिस्सा थे। ईरान ने यह कार्रवाई अमेरिका और इस्राइल के उन हमलों के जवाब में की है जो पिछले दिनों ईरान पर हुए थे।

ईरानी सेना के जनसंपर्क कार्यालय ने एक बयान जारी कर कहा कि यह हमला ईरान के खुफिया मंत्री इस्माइल खतीब और अन्य साथियों की शहादत का बदला लेने के लिए भी थी। ईरान ने साफ किया कि उसका शुरुआती इरादा तेल ठिकानों पर हमला करने या पड़ोसी देशों की अर्थव्यवस्था को नुकसान पहुंचाने का नहीं था। लेकिन जब दुश्मन ने ईरान के ऊर्जा ठिकानों को

निशाना बनाया, तो ईरान को भी जवाबी हमला करना पड़ा। आईआरजीसी का कहना है कि अब यह युद्ध एक नए और खतरनाक मोड़ पर पहुंच गया है। ईरान की आईआरजीसी ने दावा किया है कि उसने इस्राइल के भीतर लगभग 80 सैन्य ठिकानों को निशाना बनाया है। इनमें रिशोन लेजियन, रामला, लोद, ईलात और तेल अवीव के पास के कई महत्वपूर्ण इलाके शामिल हैं। इन हमलों में कई वारहेड वाली मिसाइलों और घातक ड्रोनों का इस्तेमाल किया गया। ईरान ने चेतावनी दी है कि अगर उसके ऊर्जा ठिकानों पर फिर से हमला हुआ, तो वह दुश्मन के ठिकानों को पूरी तरह तबाह कर देगा और अगला हमला इससे भी ज्यादा भयानक होगा। इस बीच, अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने ईरान को चेतावनी देते हुए कहा है कि अगर उसने फिर से कतर की ऊर्जा सुविधाओं को निशाना बनाया, तो अमेरिका ईरान के साउथ पार्स गैस फील्ड को पूरी तरह नष्ट कर देगा। ट्रंप ने स्पष्ट किया कि कतर या अमेरिका को हालिया हमलों की कोई पूर्व जानकारी नहीं थी और ईरान ने गलतफहमी में कतर की एलएनजी सुविधा पर हमला किया है। उन्होंने 'ट्रुथ सोशल' पर लिखा कि इजरायल अब इस गैस फील्ड पर तब तक हमला नहीं करेगा, जब तक ईरान कतर जैसे निर्दोष देश को निशाना बनाना बंद रखता है। ट्रंप ने साफ किया कि वह ईरान में तबाही नहीं चाहते क्योंकि इसका भविष्य पर बुरा असर पड़ेगा, लेकिन कतर पर दोबारा हमला होने की स्थिति में वे सैन्य कार्रवाई से पीछे नहीं हटेंगे। इस बीच, ईरान के गैस फील्ड और कतर की ऊर्जा सुविधाओं पर हुए इन हमलों के कारण वैश्विक बाजार में तेल और गैस की कीमतें आसमान छूने लगी हैं।

एपस्टीन फाइल्स विवाद पर अमेरिकी संसद में हंगामा, डेमोक्रेट्स सांसदों ने सदन से किया वॉकआउट

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिकी संसद में बुधवार को एपस्टीन फाइल्स मामले पर जमकर हंगामा हुआ। डेमोक्रेटिक पार्टी के सांसदों ने बुधवार को न्याय विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा एपस्टीन फाइल्स विवाद में बंद कमरे में ब्रीफिंग देने के विरोध में संसद से वॉकआउट किया। डेमोक्रेट्स ने कहा कि अटॉर्नी जनरल पाम बॉन्डी को सवालों के जवाब देने होंगे क्योंकि उन्होंने इसकी शपथ ली है।

अटॉर्नी जनरल पाम बॉन्डी और डिप्टी अटॉर्नी जनरल टॉड ब्लांश बुधवार को कैपिटल हिल पहुंचे थे, जहां उन्होंने एपस्टीन के यौन तस्करी मामले से जुड़ी लाखों फाइलों के प्रबंधन को लेकर बढ़ती नाराजगी को शांत करने की कोशिश की। हालांकि, ब्रीफिंग शुरू होने के एक घंटे के भीतर ही डेमोक्रेट्स ने व्यवस्था पर आपत्ति जताते हुए बैठक का बहिष्कार कर दिया। उन्होंने घोषणा की कि वे बॉन्डी को अगले महीने शपथ के तहत बयान देने के लिए जारी समन को लागू करवाने की मांग करेंगे। डेमोक्रेट सांसदों का कहना है कि उन्होंने बार-बार बॉन्डी से पूछा कि क्या वे समन का पालन करेंगी, लेकिन उन्होंने स्पष्ट जवाब नहीं दिया। डेमोक्रेट सांसद मैक्सवेल फ्रॉस्ट ने कहा, 'हम चाहते हैं कि वह शपथ के तहत जवाब दें, क्योंकि हमें उन पर भरोसा नहीं है।'

रिपब्लिकन सांसदों ने डेमोक्रेट के विरोध को खारिज किया : वहीं रिपब्लिकन सदस्यों ने डेमोक्रेट्स के इस कदम को राजनीतिक दिखावा करार दिया। उनका कहना है कि बॉन्डी और ब्लांश ने महत्वपूर्ण सवालों के जवाब दिए और अटॉर्नी जनरल ने कानून का पालन करने की बात कही है।

न्याय विभाग को उम्मीद थी कि एपस्टीन से जुड़े दस्तावेजों को सार्वजनिक करने से यह राजनीतिक विवाद खत्म हो जाएगा, लेकिन मामला अब भी सवालों और आलोचनाओं में घिरा हुआ है। यह मुद्दा राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के दूसरे कार्यकाल पर भी असर डालता रहा है। पाम बॉन्डी ने विभाग के कामकाज का बचाव करते हुए डेमोक्रेट्स पर आरोप लगाया कि वे इन दस्तावेजों को लेकर उठे विवाद का इस्तेमाल ट्रंप की राजनीतिक उपलब्धियों से ध्यान भटकाने के लिए कर रहे हैं। हालांकि, इस मामले में आलोचना सिर्फ विपक्ष से ही नहीं, बल्कि ट्रंप की अपनी पार्टी के कुछ सदस्यों से भी आई है। ओवरसाइट समिति ने मंगलवार को बॉन्डी को 14 अप्रैल को शपथ के तहत बयान देने के लिए समन जारी किया है। सांसदों ने आरोप लगाया है कि न्याय विभाग कई महत्वपूर्ण फाइलें छिपा रहा है और दस्तावेजों में की गई कटौती के कारण पीड़ितों की निजी जानकारी उजागर हो गई।

ईरान युद्ध के खिलाफ इस्तीफा देने वाले अधिकारी के खिलाफ जांच शुरू

वाशिंगटन, एजेंसी। ईरान युद्ध के खिलाफ अपने पद से इस्तीफा देने वाले पूर्व वरिष्ठ आतंकवाद रोधी अधिकारी जो केंट की मुश्किलें बढ़ने वाली हैं। दरअसल उन पर शक है कि उन्होंने खुफिया जानकारी लीक की। अब अमेरिकी जांच एजेंसी एफबीआई ने इसकी जांच शुरू कर दी है कि क्या जो केंट ने गोपनीय जानकारी को अनुचित तरीके से साझा किया था? जो केंट ने मंगलवार को ही अपने पद से इस्तीफा दिया था, उसके बाद ही यह जांच शुरू हुई।

इस्तीफे के बाद शुरू हुई जांच : केंट ने हाल ही में अमेरिका के नेशनल आतंकरोधी सेंटर के निदेशक पद से इस्तीफा दिया था। उन्होंने ईरान के साथ युद्ध को लेकर असहमति जताते हुए यह कदम उठाया था। यह घटनाक्रम ऐसे समय में सामने आया है जब अमेरिकी न्याय विभाग ने पिछले एक वर्ष में राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के राजनीतिक विरोधियों के खिलाफ कई जांच शुरू की हैं। इनमें पूर्व एफबीआई निदेशक जेम्स कोमी और न्यूयॉर्क की अटॉर्नी जनरल लेटेशिया जेम्स भी शामिल हैं। हालांकि, कई मामलों में अभियोजन पक्ष को अदालतों से झटका लगा है या आरोप तय कराने में मुश्किल आई है।

केंट ने ईरान के खिलाफ सैन्य कार्रवाई पर उठाए थे सवाल : जांच के दायरे में किन-किन पहलुओं की पड़ताल की जा रही है, इसकी विस्तृत जानकारी फिलहाल सामने नहीं आई है। केंट ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स

पर साझा एक बयान में अपने इस्तीफे की पुष्टि करते हुए ईरान पर सैन्य कार्रवाई पर सवाल उठाए थे। उन्होंने कहा था कि वे अंतरात्मा की आवाज के खिलाफ जाकर ईरान के साथ युद्ध का समर्थन नहीं कर सकते। उन्होंने अपने बयान में लिखा कि ईरान से अमेरिका को कोई तात्कालिक खतरा नहीं था और यह युद्ध इस्राइल और उसकी प्रभावशाली अमेरिकी लॉबी के दबाव में शुरू किया गया।

वहीं, राष्ट्रपति ट्रंप ने पत्रकारों से बातचीत में कहा कि उन्हें हमेशा लगता था कि केंट सुरक्षा के मुद्दे पर कमजोर हैं। उन्होंने कहा कि यदि उनकी टीम में कोई ईरान को खतरा नहीं मानता, तो ऐसे लोगों की हमें जरूरत नहीं है। ट्रंप प्रशासन के अन्य अधिकारियों, जिनमें सीआईए निदेशक जॉन रेटक्लिफ भी शामिल हैं, ने भी केंट के बयान से दूरी बना ली है। बुधवार रात केंट से संपर्क करने की कोशिश की गई, लेकिन उनकी ओर से कोई जवाब नहीं मिला।

एनवाईयू अध्ययन में खुलासा: उम्र बढ़ने की चिंता, सेहत का डर तेजी से ले जाता है बुढ़ापे की ओर

न्यूयॉर्क , एजेंसी। उम्र बढ़ने को लेकर चिंता, खासकर भविष्य में स्वास्थ्य बिगड़ने का डर, सिर्फ मानसिक तनाव नहीं बल्कि शरीर की जैविक घड़ी को भी तेज कर सकता है। न्यूयॉर्क यूनिवर्सिटी (एनवाईयू) के एक नए अध्ययन में पाया गया है कि जो महिलाएं बढ़ती उम्र को लेकर अधिक चिंतित रहती हैं, उनके खून में तेज जैविक उम्र बढ़ने के संकेत दिखाई देते हैं। यह निष्कर्ष 700 से अधिक महिलाओं पर किए गए शोध के आधार पर सामने आया है।

एनवाईयू स्कूल ऑफ ग्लोबल पब्लिक हेल्थ के इस अध्ययन में 726 महिलाओं के आंकड़ों का विश्लेषण किया गया, जो मिडलाइफ इन द यूनाइटेड स्टेट्स (एमआईडीयूएस) अध्ययन का हिस्सा थीं। प्रतिभागियों से पूछा गया कि वे उम्र बढ़ने के साथ कम आकर्षक होने, स्वास्थ्य समस्याएं विकसित होने या बच्चों को जन्म देने की उम्र पार कर जाने को लेकर कितनी चिंतित हैं। शोधकर्ताओं ने प्रतिभागियों के रक्त नमूनों का विश्लेषण दो स्थापित एपिजेनेटिक क्लॉक्स के माध्यम से किया। पहला क्लॉक डुनेडिनपेस जैविक उम्र बढ़ने की गति को मापता है, जबकि दूसरा ग्रिमएज2 समय के साथ शरीर में जमा हुए जैविक नुकसान का अनुमान लगाता है। परिणामों में पाया गया कि जो महिलाएं उम्र बढ़ने को लेकर अधिक चिंता व्यक्त करती थीं, उनमें डुनेडिनपेस क्लॉक के अनुसार तेज एपिजेनेटिक एजिंग के संकेत मिले।

क्यों अधिक प्रभावित हो सकती हैं महिलाएं : अध्ययन की मुख्य लेखिका और एनवाईयू स्कूल ऑफ ग्लोबल पब्लिक हेल्थ की मरियाना रोड्रिग्स के अनुसार, महिलाएं विशेष रूप से उम्र बढ़ने की चिंता के प्रति संवेदनशील होती हैं। सामाजिक अपेक्षाएं, युवावस्था और रूप-रंग को लेकर दबाव, तथा प्रजनन क्षमता से जुड़ी चिंताएं मध्य आयु में तनाव को बढ़ाती हैं। उन्होंने

कहा कि मध्य आयु की महिलाएं अक्सर कई भूमिकाएं निभा रही होती हैं, जैसे अपने वृद्ध माता-पिता की देखभाल करना। परिवार के बुजुर्गों को बीमार होते देख वे यह सोचकर चिंतित होती हैं कि कहीं उनके साथ भी भविष्य में ऐसा न हो।रोड्रिग्स के शब्दों में, हमारा शोध यह संकेत देता है कि व्यक्तिपरक अनुभव, उम्र बढ़ने के वस्तुनिष्ठ मापदंडों को प्रभावित कर सकते हैं। उम्र से जुड़ी चिंता केवल मनोवैज्ञानिक मुद्दा नहीं है, बल्कि यह शरीर पर वास्तविक प्रभाव छोड़ सकती है।

मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य का गहरा संबंध : अध्ययन में बताया गया कि मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य जीवनभर गहराई से जुड़े रहते हैं, भले ही अक्सर इन्हें अलग-अलग समझा जाता हो। अध्ययन के वरिष्ठ लेखक प्रो. एडोल्फो क्यूवास ने कहा कि यह शोध उम्र बढ़ने की चिंता को एक मापने योग्य और संशोधित किए जा सकने वाले मनोवैज्ञानिक कारक के रूप में पहचानता है, जो जैविक उम्र बढ़ने को प्रभावित करता प्रतीत होता है। हालांकि शोधकर्ताओं ने यह भी स्पष्ट किया कि यह अध्ययन एक ही समय बिंदु पर आधारित है, इसलिए इससे प्रत्यक्ष कारण-परिणाम संबंध स्थापित नहीं किया जा सकता।

स्वामी,मुद्रक व् प्रकाशकः सुरेश मौर्या द्वारा अष्ठ विनायक ओफ़्सेट एफपी,149 प्लोट 26 खोडीयारनगर,सिद्धिविनायक मंदीर के पास ,भाटेना) हो.सो अंजना सुरत गुजरात से मुद्रित एवं 191 महादेव नगर उधना सुरत गुजरात से प्रकाशित संपादक : सुरेश मौया (M) 9879141480 RNI No.:GUJHIN/2018/75100 (Subject to Surat jurisdiction)

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

संक्षिप्त समाचार

भारत आएंगे बांग्लादेश के विदेश मंत्री खलीलुर रहमान

● यूनुस राज खत्म होते ही सुधरने लगे संबंध, अहम होगा दौरा

नई दिल्ली (एजेंसी)। बांग्लादेश में मुहम्मद यूनुस के नेतृत्व वाली अंतरिम सरकार का शासन खत्म होने ही भारत बांग्लादेश के रिश्ते पटरी पर लौटने लगे हैं। इसकी शुरुआत बांग्लादेश के विदेश मंत्री की भारत यात्रा से हो सकती है। मामले से जुड़े लोगों ने बताया कि बांग्लादेश के विदेश मंत्री खलीलुर रहमान अगले महीने भारतीय राजधानी की एक संक्षिप्त यात्रा पर आ सकते हैं। यह इसीलिए अहम है क्योंकि ढाका में

तारिक रहमान की सरकार बनने के बाद बांग्लादेशी विदेश मंत्री की यह पहली विदेश यात्रा होगी। यह खबर ऐसे समय में सामने आई है जब दोनों ही देश संबंधों में आए भारी तनाव के बाद रिश्तों को दोबारा मजबूत बनाने की कोशिशें कर रही हैं। सूत्रों ने नाम ना छापने की शर्त पर बताया कि रहमान 8 अप्रैल को मॉरीशस में होने वाले हिंद महासागर सम्मेलन में जाते समय नई दिल्ली में रुक सकते हैं। दिलचस्प बात यह भी है कि रहमान यूनुस सरकार का भी हिस्सा रह चुके हैं और वे तब पूर्व राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार की जिम्मेदारी संभाल रहे थे। इसके बाद प्रधानमंत्री तारिक रहमान के मंत्रिमंडल में उनका नाम काफी चौंकाने वाला कदम था। इससे पहले भारतीय उच्चायुक्त प्रणय वर्मा ने पिछले महीने ढाका में रहमान से मुलाकात की थी और विदेश मंत्री एस. जयशंकर की ओर से उन्हें जल्द से जल्द भारत आने का निमंत्रण दिया था।

अमेरिकी इतिहास की सबसे बड़ी मिसकैलकुलेशन, तबाही होगी

● ओमान के विदेश मंत्री- अमरीका-इजराइल को लताड़ा

नई दिल्ली (एजेंसी)। ओमान के विदेश मंत्री बद्र अल-बुसैदी ने अमेरिका और इजरायल दोनों पर निशाना साधा है। उनके मुताबिक ईरान युद्ध में कूदना अमेरिका की सबसे बड़ी भूल है और यह सभी खाड़ी देशों के लिए बड़ी तबाही लेकर आएगा। ओमान के विदेश मंत्री ने द इकोनॉमिस्ट में एक लेख लिखा है जिसमें कहा है कि ईरान और अमेरिका का परमाणु समझौता होने वाला था और दोनों देश इसका ऐलान करने वाले थे। लेख में

विदेश मंत्री बद्र अल-बुसैदी ने लिखा है, ऐसे में जब ईरान पर हमला किया गया, तो यह सिर्फ हैरान करने वाला नहीं था, बल्कि एक बड़ा झटका भी था। ओमान के विदेश मंत्री के मुताबिक, ईरान ने पहले ही कहा था कि वह अपनी यूरेनियम संवर्धन को सीमित करेगा। इसके बदले में उसे कुछ राहत मिलने की उम्मीद थी, लेकिन इससे पहले ही सैन्य कार्रवाई शुरू हो गई। विदेश मंत्री के अनुसार राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप पर इस युद्ध में शामिल होने के लिए इजरायल की ओर से दबाव डाला गया था। उनके मुताबिक, अमेरिकी प्रशासन ने अपने इतिहास की सबसे बड़ी गलत गणनाओं में से एक की है। उन्होंने यह भी कहा कि यह युद्ध अमेरिका का नहीं है और इससे कोई सकारात्मक नतीजा निकलने वाला नहीं है। ओमान की विदेश मंत्री ने जोर देकर कहा कि हर हाल में बातचीत फिर से शुरू करनी होगी।

संत प्रेमानंद से मिलीं राष्ट्रपति, हाथ जोड़कर किया प्रणाम

● संत ने राधे-राधे कहा, परिवार के साथ मुर्मू वृंदावन पहुंचीं, 25 मिनट चर्चा की

मथुरा (एजेंसी)। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने मथुरा में संत प्रेमानंद महाराज से मुलाकात की। उन्होंने 25 मिनट तक आध्यात्मिक चर्चा की। राष्ट्रपति शुक्रवार सुबह 7 बजे बारिश के बीच परिवार के साथ प्रेमानंदजी के वृंदावन आश्रम पहुंचीं। उन्होंने हाथ जोड़कर संत को प्रणाम किया। संत प्रेमानंद ने राधे-राधे कहकर उनका अभिवादन स्वीकार किया। आश्रम में राष्ट्रपति का संतों ने माला-चुनरी ओढ़ाकर स्वागत किया। राष्ट्रपति ने प्रेमानंदजी को जन्मदिन की भी बधाई दी। गुरुवार यानी 19 मार्च को उनका 56वां जन्मदिन था।

दरअसल, राष्ट्रपति मुर्मू, यूपी के 3 दिन के दौरे पर हैं। गुरुवार को उन्होंने अयोध्या में रामलला के दर्शन किए थे। फिर शाम को मथुरा पहुंचीं। प्रेमानंदजी से मुलाकात के बाद बाबा नीम करौरी महाराज के आश्रम पहुंचीं। राष्ट्रपति मुर्मू का मथुरा का यह दूसरा दौरा है। इससे पहले वह पिछले साल 25 सितंबर को आई थीं।

दरबार में पूरे परिवार के साथ पहुंची थीं राष्ट्रपति

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के साथ उनकी बेटी इतिश्री मुर्मू, दामाद गणेश हेम्ब्रम और दोनों नातिनें आद्याश्री और नित्याश्री मौजूद थीं। केलीकुंज आश्रम में राष्ट्रपति और उनके परिवार के लिए कुर्सियां लगाई गई थीं। बताया जा रहा है कि राष्ट्रपति संत प्रेमानंद महाराज के साथ आध्यात्मिक चर्चा के दौरान भाव-विभोर दिखीं। इस दौरान कुटिया में सिर्फ राष्ट्रपति, उनके परिजन और संत के करीबी शिष्य ही मौजूद रहे। संत प्रेमानंद से मुलाकात के बाद राष्ट्रपति, रामकृष्ण मिशन हॉस्पिटल पहुंची। वहां पश्चिमी यूपी की सबसे आधुनिक कैंसर यूनिट 'नंदकिशोर सोमानी ऑन्कोलॉजी ब्लॉक' का उद्घाटन किया। इस दौरान राज्यपाल आनंदीबेन पटेल, यूपी के मंत्री चौधरी लक्ष्मीनारायण भी मौजूद रहे।

तृतीय मां चंद्रघंटा

देवी मां के तृतीय ईश्वरीय स्वरूप का नाम मां चन्द्रघण्टा है। 'चंद्र' हमारी बदलती हुई भावनाओं, विचारों का प्रतीक है (ठीक वैसे ही जैसे चन्द्रमा घटता व बढ़ता रहता है)। 'घंटा' का अर्थ है जैसे मंदिर के घण्टे-घड़ियाल।

युद्ध केवल स्वार्थ का नतीजा

दुनिया विनाश के कगार पर

● ईरान जंग पर पहली बार बोले आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत

नई दिल्ली (एजेंसी)। संघ प्रमुख मोहन भागवत ने शुक्रवार को कहा है कि दुनिया में संघर्षों की मूल वजह स्वार्थी हित और वर्चस्व की चाहता है। उन्होंने जोर देकर कहा है कि स्थायी शांति केवल एकता, अनुशासन और धर्म के पालन से ही हासिल की जा सकती है। नागपुर में एक सभा को संबोधित करते हुए भागवत ने कहा कि 2,000 सालों से दुनिया ने संघर्षों को सुलझाने के लिए कई विचारों पर प्रयोग किए हैं, लेकिन सफलता बहुत कम मिली है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) प्रमुख शहर में विश्व हिंदू परिषद के दफ्तर की नींव रखने के बाद एक सभा को संबोधित कर रहे थे। इस दौरान उन्होंने बताया कि धार्मिक

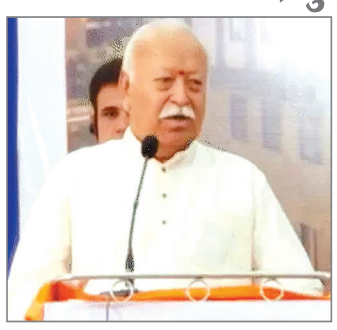

असहिष्णुता, जबरदस्ती धर्म परिवर्तन और ऊंच नीच की भावनाएं आज भी मौजूद हैं। उन्होंने कहा, विश्व अभी लड़खड़ा रहा है। सारी परिस्थितियां हमारे सामने हैं।

युद्ध होने के पीछे की असली वजह स्वार्थ है। वर्चस्व की कलह है। मूल में स्वार्थ प्रवृति है। संघ प्रमुख ने कहा कि भारत मानवता में विश्वास रखता है, जबकि दूसरे लोग अस्तित्व के संघर्ष और योग्यतम की उत्तरजीविता में विश्वास रखते हैं। उन्होंने कहा, दुनिया को सद्भाव की जरूरत है, संघर्ष की नहीं। दुनिया विनाश के कगार पर है: युद्ध के बीच बार-बार देशों से आवाज उठ रही है कि भारत ही इसको समाप्त कर सकता है। क्योंकि भारत की प्रवृत्ति का ज्ञान विश्व को है। भागवत ने आगे कहा कि भारत का प्राचीन ज्ञान सिखाता है कि सभी आपस में जुड़े हुए हैं और एक हैं। उन्होंने आगे कहा कि आधुनिक विज्ञान भी धीरे-धीरे इसी समझ की ओर बढ़ रहा है। वहीं आचरण के महत्व पर जोर दिया।

सरकार ने 300 अवैध बेटिंग वेबसाइट्स-एप ब्लॉक किए

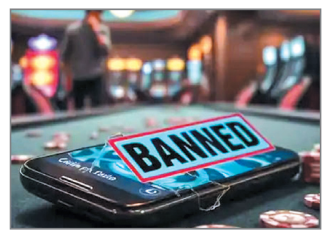

नई दिल्ली (एजेंसी)। सरकार ने अवैध ऑनलाइन जुआ और सट्टेबाजी के खिलाफ बड़ी कार्रवाई करते हुए 300 वेबसाइट्स-एप्स को ब्लॉक किया है। सरकारी सूत्रों के मुताबिक अब तक कुल 8400 ऐसे प्लेटफॉर्म्स पर बैन लगाया जा चुका है। इनमें से करीब 4900 वेबसाइट्स ऑनलाइन गेमिंग एक्ट लागू होने के बाद ब्लॉक की गई हैं। सरकारी सूत्रों के मुताबिक जिन प्लेटफॉर्म्स पर कार्रवाई की गई है, वे मुख्य रूप से अवैध ऑनलाइन सट्टेबाजी और जुए से जुड़े थे। इनमें ऑनलाइन स्पोर्ट्स बेटिंग प्लेटफॉर्म, ऑनलाइन कसीनो (स्लॉट्स, रूलेट और लाइव डीलर गेम्स), पी-टू-पी बेटिंग एक्सचेंज, सट्टा/मटका नेटवर्क और रियल मनी कार्ड ऐप्स शामिल हैं। सरकार का कहना है कि इन प्लेटफॉर्म्स के जरिए बड़े स्तर पर अवैध लेनदेन और जुए को बढ़ावा मिल रहा था। इसे रोकने के लिए आईटी एक्ट और अन्य संबंधित कानूनों के तहत लगातार निगरानी और कार्रवाई की जा रही है। ऑनलाइन गेमिंग एक्ट लागू होने के बाद इस तरह के प्लेटफॉर्म्स पर कार्रवाई में तेजी आई है।

तेल की कीमतों पर ईरान युद्ध का पहला असर

● देश में दो रुपए से ज्यादा महंगा हुआ पावर पेट्रोल

नई दिल्ली (एजेंसी)। पश्चिम एशिया में अमेरिका-इजरायल और ईरान के बीच जारी युद्ध के बाद बनी ईंधन संकट की स्थिति का पहली बार पेट्रोल की कीमतों पर असर पड़ा है। देश में प्रीमियम यानी पावर पेट्रोल की कीमतें बढ़ा दी गई हैं। जानकारी के मुताबिक, प्रीमियम पेट्रोल की कीमतों में 2.30 रुपये प्रति लीटर की बढ़ोतरी की गई है। एक रिपोर्ट के मुताबिक, पेट्रोल डीलरों ने इस बात की पुष्टि की है। रिपोर्ट के अनुसार फिलहाल यह कीमतें सिर्फ पावर पेट्रोल की कीमतों पर लागू होंगी और रेगुलर पेट्रोल की कीमत नहीं बढ़ाई गई है। इस बढ़ोतरी का असर मुख्य रूप से उन ग्राहकों पर पड़ेगा जो हाई-ऑक्टेन या प्रीमियम पेट्रोल का इस्तेमाल करते हैं। बता दें कि प्रीमियम पेट्रोल का इस्तेमाल आमतौर पर बेहतर इंजन परफॉर्मेंस और ज्यादा माइलेज के लिए किया जाता है। फिलहाल तेल कंपनियों की ओर से कीमतों में बढ़ोतरी का कोई आधिकारिक कारण नहीं बताया गया है। हालांकि जानकारों का मानना है कि ईरान युद्ध के चलते ग्लोबल कच्चे तेल की कीमतों में उतार-चढ़ाव और लॉजिस्टिक्स खर्च में बदलाव बढ़ोतरी की मुख्य वजह है।

जरूरत का 88 प्रतिशत आयात करता है भारत

गौरतलब है कि अमेरिका और इजराइल द्वारा ईरान पर हमले और तेहरान की व्यापक जवाबी कार्रवाई के बाद तेल की कीमतें 100 डॉलर प्रति बैरल से ऊपर पहुंच गई हैं और पूरी दुनिया में हाहाकार मचा हुआ है। वहीं भारत अपनी कच्चे तेल की जरूरत का लगभग 88 प्रतिशत आयात करता है और उसके लिए वैश्विक कीमतों में यह उछाल बड़ा व्यापक आर्थिक जोखिम उत्पन्न करता है। यह भारत के चालू खाते के घाटे को भी बढ़ाता है, रुपये पर दबाव डालता है और घरों व व्यवसायों के लिए ईंधन लागत बढ़ाता है। तेल बाजार के इतिहास में सबसे बड़ी आपूर्ति में बाधा का प्रमुख कारण यह है कि युद्ध शुरू होने के बाद होर्मुज जलडमरूमध्य से जहाजों की आवाजाही लगभग ठप हो गई है।

रूसी इनपुट पर एनआईए ने पकड़े थे अमेरिकी-यूक्रेनी नागरिक

● म्यांमार सीमा पर हथियारबंद गुटों को ट्रेनिंग दी, ग्रुप में 14-15 लोग, अन्य की तलाश जारी

आईजोल (एजेंसी)। भारतीय सुरक्षा एजेंसियों ने पूर्वोत्तर (मिजोरम सीमा) में एक बड़े अंतरराष्ट्रीय नेटवर्क का भंडाफोड़ किया है। नेशनल इन्वेस्टीगेशन एजेंसी ने रूसी एजेंसियों से मिली जानकारी के आधार पर अमेरिकी और यूक्रेनी नागरिकों को गिरफ्तार किया था। पकड़े गए लोगों पर भारत के खिलाफ आतंकी गतिविधियों की साजिश रचने का आरोप है। खुफिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, यह गिरोह म्यांमार के हथियारबंद गुटों को ट्रेनिंग दे रहे था। टूरिस्ट वीजा की आड़ में म्यांमार के विद्रोही गुटों को ड्रोन और आधुनिक युद्ध तकनीक की ट्रेनिंग दी जा रही थी। ये लोग टूरिस्ट वीजा पर भारत आए थे, लेकिन मिजोरम में बिना अनुमति अवैध रूट से पहुंचे और यहां से पड़ोसी देश म्यांमार की सीमा में घुस गए। सूत्रों के अनुसार 8 अन्य यूक्रेनियन की तलाश जारी है। कुल 14-15 लोगों का ग्रुप

था। ये लोग यूरोप से बड़े पैमाने पर ड्रोन पहुंचा रहे थे, जो संभवतः भारत से जुड़े उग्रवादी समूहों तक पहुंच सकते थे। आरोपी कई बार ट्रेनिंग देने आ चुके हैं। इस बार वे गुवाहाटी पहुंचे और फिर मिजोरम से अवैध रूप से म्यांमार में घुसे, जहां ट्रेनिंग दी।

● वैनडाइक है मास्टरमाइंड, लीबिया में विद्रोही लड़ाकों का मददगार- मैथ्यू एरॉन

वैनडाइक अमेरिका के मैरीलैंड के बाल्टीमोर का रहने वाला है। वह एक भाड़े का सिपाही, डॉक्यूमेंट्री फिल्ममेकर, सुरक्षा विश्लेषक और सन्स ऑफ लिबर्टी इंटरनेशनल नाम की संस्था के संस्थापक है। मैथ्यू ने वॉर कॉरस्पोंडेंट और बिजनेसमैन के तौर पर भी काम किया है।

पूर्वोत्तर में ड्रोन वारफेयर का डर

म्यांमार गृहयुद्ध में ड्रोन का इस्तेमाल बढ़ा है। एनआईए सूत्रों का मानना है कि ये ड्रोन अब भारत के उग्रवादियों तक पहुंच सकते हैं। इससे पूर्वोत्तर में ड्रोन अटैक का खतरा बढ़ेगा। यहां म्यांमार में चल रहे गृहयुद्ध और जातीय संघर्ष के कारण पहले भी विदेशी मर्सिनरी या ट्रेनर्स के आने की खबरें आ चुकी हैं। मिजोरम-म्यांमार सीमा पर लंबे समय से अस्थिरता बनी है। यहां चिन स्टेट, अराकान आर्मी और अन्य सशस्त्र जातीय संगठन जैसे चिन नेशनल आर्मी, चिन फ्रंट आदि सैन्य जुंटा के खिलाफ लड़ रहे हैं। चिन स्टेट म्यांमार का हिस्सा है, जो मिजोरम से सटा है।

● तमिलनाडु के सलेम में भयानक सड़क हादसा

2 बच्चों समेत 8 लोगों की मौत सभी एक ही परिवार के सदस्य

सलेम (एजेंसी)। तमिलनाडु के सलेम में बड़ा दर्दनाक हादसा हुआ है। सलेम के पास उथमासोलपुरम में हुई दुर्घटना में राज्य परिवहन निगम की एक बस कथित तौर पर चालक के नियंत्रण से बाहर हो गई और विपरीत लेन में चली गई। इसके बाद

दो बच्चों समेत आठ लोगों की मौत हो गई। इस हादसे से पूरे क्षेत्र में शोक का माहौल है। ईरोड से सलेम जा रही एक तमिलनाडु अनियंत्रित बस सूलाईमेडु के पास एक मिनी मालवाहक वाहन से टकरा गई। इस हादसे में चार लोगों की मौके पर ही मौत हो गई। कई अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए थे, उन्हें अस्पतालों में भर्ती कराया गया। इनमें से कुछ ने बाद में गंभीर चोटों के कारण दम तोड़ दिया। इससे मरने वालों की कुल संख्या 8 हो गई। पांच साल की निथिशका, 11 महीने की जीविका के अलावा मणिकंदन, इरुसयी, सेल्वराज, अमुथा और मुरुगन की हादसे में जान चली गई। बताया गया है कि हादसे के शिकार ऑटो में 10 से ज्यादा लोग सवार थे। बताया जा रहा है कि ये सभी एक ही परिवार के सदस्य थे और किसी समारोह से लौट रहे थे। हादसे की जानकारी होते ही सलेम की जिला कलेक्टर वृंदा देवी और पुलिस अधिकारी पहुंचे।

एयर इंडिया ने कनाडा के लिए भेजा 'गलत' बोइंग बी 777

● नौ घंटे हवा में तैरते रहने के बाद चीन से लौटा वापस भारत

नई दिल्ली (एजेंसी)। एयर इंडिया के एक विमान को वैंकूवर पहुंचने से पहले ही लगभग नौ घंटे की उड़ान के बाद दिल्ली लौटना पड़ा। अगर आप सोच रहे हैं कि उसे ईरान-इजरायल युद्ध की वजह से लौटना पड़ा तो आप गलत हैं।

वह पूर्वी रास्ते से जा रहा था, न कि खाड़ी युद्ध क्षेत्र वाले। उसके लौटने का कारण थोड़ा अजीब है। जिस प्लेन को कनाडा में एंट्री की मंजूरी नहीं थी, एयर इंडिया ने उस विमान को रवाना किया था। विमान यात्रियों को लेकर उड़ा, लेकिन कनाडा पहुंचने से पहले ही उसे वापस लौटना पड़ा। दरअसल, एयर इंडिया के पास कनाडा के लिए अपने बोइंग 777-300 एक्सटेंडेड रेंज बेड़े को संचालित करने की मंजूरी है, न कि बी 777-200 लॉन्ग रेंज को। गुरुवार को जिस फ्लाइट ने वैंकूवर के लिए उड़ान भरी वह गलत थी।

इजराइल को धमकी देने के बाद ईरानी अफसर की मौत

● कहा था-नेतन्याहू के लिए सरप्राइज तैयार, कुछ घंटे बाद एयरस्ट्राइक में मारे गए

तेल अवीव/तेहरान (एजेंसी)। ईरान के इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स के प्रवक्ता जनरल अली मोहम्मद नैनी की शुक्रवार को हवाई हमले में मौत हो गई। आईआरजीसी ने एक बयान जारी कर उनकी मौत की पुष्टि की है। रिपोर्ट्स के मुताबिक, नैनी को हालिया हमले में निशाना बनाया गया। नैनी ने अपने आखिरी बयान में कहा था कि इजराइल और प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू के लिए 'सरप्राइज' तैयार है। उन्होंने दावा किया था कि ईरान की मिसाइल क्षमता अपने चरम पर है और दुश्मन को जल्द ही इसका असर देखने को मिलेगा। नैनी ने यह भी कहा था कि युद्ध के बावजूद ईरान लगातार मिसाइल उत्पादन कर रहा है और उसके पास पर्याप्त भंडार मौजूद है। लेकिन उनका यह बयान सामने आने के कुछ ही घंटों बाद आईआरजी ने पुष्टि की कि नैनी अमेरिकी-इजराइली हमले में मारे गए।

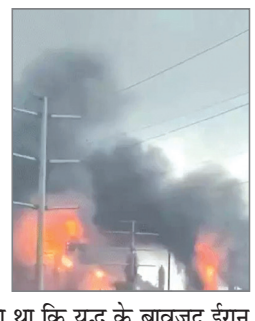

तेल की कमी से निपटने के लिए आईईए ने दिए सुझाव

मिडिल ईस्ट में जारी जंग के चलते वैश्विक तेल बाजार पर गंभीर असर पड़ा है और सप्लाई संकट गहराता जा रहा है। इस स्थिति से निपटने के लिए इंटरनेशनल एनर्जी एजेंसी ने कई अहम सुझाव दिए हैं। आईईए ने कहा है कि जहां संभव हो, वर्क फ्रॉम होम अपनाया जाए, ताकि रोजाना ऑफिस आने-जाने में लगने वाला ईंधन बचाया जा सके। इसके अलावा हाईवे पर गाड़ियों की स्पीड कम से कम 10 किमी प्रति घंटा घटाने की सलाह दी गई है, जिससे ईंधन की खपत कम हो सकती है। एजेंसी ने सरकारों से पब्लिक ट्रांसपोर्ट को बढ़ावा देने और जरूरत पड़ने पर ऑड-ईवन जैसी व्यवस्था लागू करने पर भी विचार करने को कहा है।